परिशिष्ट

❑राजस्थानी साहित्य रौ इतिहास

❑काव्य री परिभासा, तत्त्व, भेद, प्रयोजन
अर राजस्थानी छंद-अलंकार

❑राजस्थानी निबंध-लेखण

❑साहित्य-इतिहास

राजस्थानी साहित्य रौ इतिहास

विक्रम री नवीं सताब्दी सूं आपरौ आपौ लियां मरुभासा रै रूप में चावी राजस्थानी री पिछाण मुलकां चावी है। राजस्थानी भासा आपरी उत्पत्ति रै बगत सूं ई विद्वानां रै विचारां मुजब चालती आई है। इणरी उत्पत्ति नैं लेयनै भासाविद् अेक मत कोनी। अपभ्रंस रा 27 भेदां मांय सूं तीन अपभ्रंसां रौ चलण घणौ रैयौ— 1. सौरसेनी अपभ्रंस, 2. मरुगुर्जरी अर 3. नागर अपभ्रंस। राजस्थानी वास्तै ई अै तीन विचार चालै। केई मरुगुर्जरी अपभ्रंस सूं तौ केई नागर अपभ्रंस अर केई सौरसेनी सूं इणरी उत्पत्ति मानै। पण घणकरा विद्वान सौरसेनी सूं राजस्थानी री उत्पत्ति मानै, जिणरौ पसराव भूखेत्र घणौ हौ। आं विद्वानां मांय डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. अेल.पी. तैस्सीतोरी अर रिचार्ड पिसल रा नांव गिणाया जाय सकै। राजस्थानी इतरी सिमरध भासा है अर इणरौ साहित्य-भंडार इतरौ अथाग है कै कालक्रम री दीठ सूं उणरी कूंत करणौ घणौ दौरौ काम है। विद्वानां रौ काम ई चिंतन अर कूंत रौ है। इण रा इतिहास नैं लेयनै ई न्यारा-न्यारा बगत में बांधण री तजबीज घणा ई भासाविद् करी। राजस्थानी साहित्य रै इतिहास नैं लेयनै डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पद्मश्री सीताराम लाळस, डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया अर अनेकूं विद्वानां काल-विभाजन करियौ। सगळा आपौ-आपरी दीठ सूं रचनावां नैं आदि, मध्य अर आधुनिक काल में बांट्यौ है। कालक्रम साहित्य रै इतिहास रौ नेम है। इणनैं न्यारा-न्यारा खंडां में बांटण सूं रचनावां री कूंत करणी सौरौ काम व्है जावै। इण वास्तै साहित्य-मीमांसक सगळी भासावां रा साहित्य नैं इणीज भांत विगतवार बांटता आया है। इतिहास री दीठ सूं जद किणी रचना री बात करां तौ उणमें उण बगत री थितियां मेळ खावै कै नीं, अै सब बातां ई विचार रा विसय होवै। साहित्य अर इतिहास रौ मणिकांचन जोग बणै। साहित्य अर इतिहास में किणी रचना रौ बगत बित्तौ मोल नीं राखै जित्तौ उणरै साहित्यिक सरूप अर विसय-वस्तु रौ मोल होवै। डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया री पोथी 'राजस्थानी साहित्य का इतिहास' में साहित्य रौ बगत इण भांत राखीज्यौ है—

सरू पैलड़ौ काल	—	वि. सं. 835 सूं 1240 तांई
वीरगाथा काल	—	वि. सं. 1241 सूं 1584 तांई
भक्ति काल	—	वि. सं. 1585 सूं 1913 तांई
आधुनिक काल	—	वि. सं. 1914 सूं लगोतार

आ बात तौ आपां आछी तरियां जाणां हां कै साहित्य में समाज री सगळी थितियां रौ वरणन होवै। देस, काल, थिति रै बूतै ई साहित्य रचीजै। साहित्य में देस अर समाज री दसा अर दिसा दोनूं निजर आवै। राजस्थानी भासा रै सरुआती बगत में देस मांय असमानता, आपसी ईसका, बैर, सामाजिक विसंगतियां, विडरूपता, धारमिक मत-मतांतर, विदेसी हमलावरां सूं काठौ तळीज्योड़ौ मानखौ आपरै धरम रुखाळां री बाट जोवतौ हो। मुसळमान हमलावरां रै साथै ई चारण कवियां रै उत्थान रौ औ बगत हो। चारण कवियां अपभ्रंस री निवृत्तिमूलक सांत-रस री काव्यधारा नैं प्रवृत्तिमूलक राजस्थानी रौ रूप दियौ। वीर साहित्य री रचना कर चारण कवि अठै रा वीरां में ओज भर्‌यौ। अठै रा वीर विजयश्री या वीरगति दो ई बात समझता। जुद्धां री इण भोम माथै पग-पग थरमापोली जैड़ा जुद्ध लड़ीज्या तौ लियोनिडाज जैड़ा जुद्ध-वीर घर-घर जलम्या। राजस्थानी काव्य में वीरोचित भावां रौ जबरौ वरणन मिळै। वीरगति पूग्योड़ा वीरां रौ सुरग री अपछरावां वरण करण नै आवै। अैड़ा पारलौकिक सुखां री अभिव्यंजना वीरकाव्य में करीजी है। राजस्थानी साहित्य रै विविध सरूपां नैं आपां नीचै मंड्योड़ा बिंदुवां सूं समझ सकां, जिणरी तालिका आगलै पानै पर दिरीजी है—

1. कालगत सरूप, 2. काव्यशास्त्रीय सरूप 3. सैलीगत सरूप 4. प्रवृत्तिमूलक अध्ययन 5. साहित्यिक सरूप।

1. कालगत सरूप

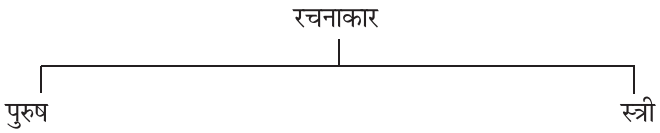

2. काव्यसास्त्रीय सरूप

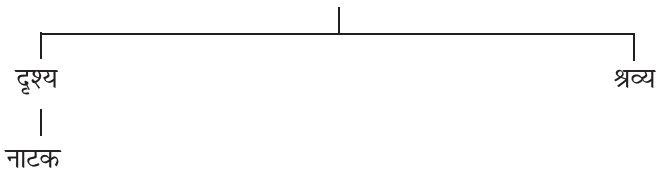

3. सैलीगत सरूप

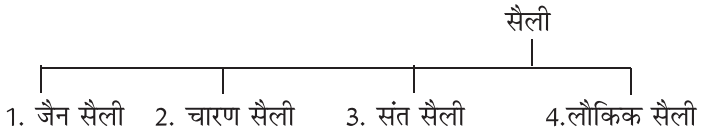

4. प्रवृत्तिमूलक अध्ययन

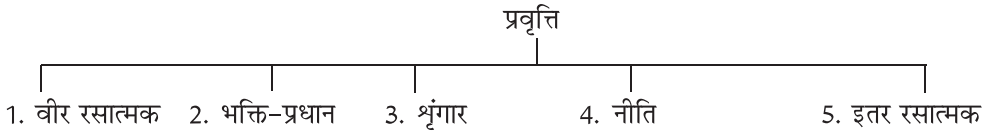

5. साहित्यिक सरूप

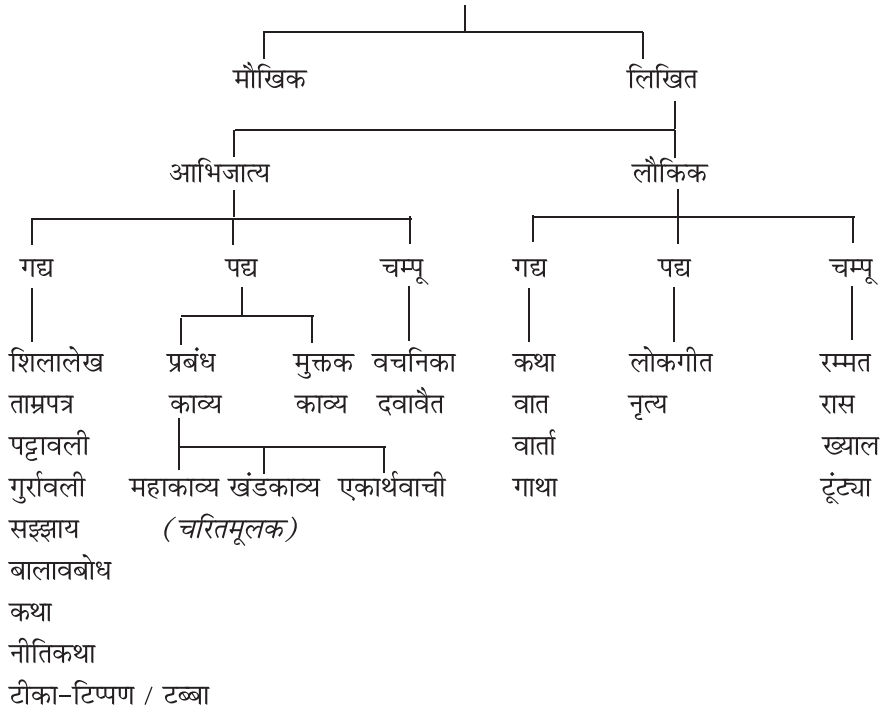

औ बगत राजपूत सासकां रै बधापा रौ ई मानीजै। राजपूत सासकां रा राजदरबारां में अठै रौ साहित्य हरमेस पोखीजतौ रैयौ। राजपूत काल में अठै राजकवियां री अेक लूंठी परंपरा रैयी। राजस्थानी काव्य में वीरता, भक्ति अर सिणगार री रचनावां रौ बरोबर रचाव होयौ। आ बात न्यारी है कै कदैई वीर रस री रचनावां घणी रचीजी तौ कदैई भक्ति रस या सांत रस री। राजस्थानी साहित्य रा सरुआती बगत में जैन रचनाकारां रौ घणौ सैयोग रैयौ। इणमें आचार्य हेमचन्द्र री व्याकरण सूं जुड़्योड़ी रचना, कवि स्वयंभू कृत 'पउम चरिउ' अर 'रिट्ठणेमि चरिउ' जैड़ी रचनावां में रामकथा नैं आधार बणायौ तौ दूजी रचना में 'हरिवंस पुराण' है। स्वयंभू री छंदसास्त्र री रचना ई साम्हीं आवै।

महाकवि पुष्पदंत 'महापुराण' री रचना करी, जिणमें त्रेसठ महापुरुसां रै चरित्र रौ वरणन मिळै। 'णायकुमार चरिउ' में नागकुमार संबंधी काव्य है। 'जसहर चरिउ' में यशोधरा रै चरित्र रौ वरणन है। कवि योगीन्दु जैन साधु हा। आपरी रचनावां में 'परमात्म प्रकास' अर 'योगसार' दूहां में रचित काव्य है। आचार्य हरिभद्र सूरि जैन धरम अपणायौ, जदकै वै जलम सूं बामण हा। आप अनेक ग्रंथां री रचना करी, जिणमें 'ललित विस्तार', 'धूर्ताख्यान', 'संबोधन प्रकरण' अर 'जसहर चरिउ' खास है।

हेमचन्द्र सूरि री काव्य-प्रतिभा रै कारण गुजरात नरेस सिद्धराज जयसिंघ सोलंकी घणौ मान दियौ अर इणां रै पछै ई आपरौ आव-आदर राजनरेसां में बधतौ गियौ। आप सिद्धराज री प्रेरणा सूं 'सिद्ध-हेम व्याकरण' री रचना करी। 'अभिधान चिंतामणि', 'काव्यानुशासन', 'छंदानुशासन', 'देसी नाममाळा', 'धातु पारायण', 'योगशास्त्र', 'शब्दानुशासन' जैड़ा नामी ग्रंथां री रचना कर राजस्थानी नैं सिमरथ करी। राजस्थानी रौ पैलड़ौ साहित्य जिण माथै अपभ्रंस रौ पूरौ असर निजर आवै, उणमें जैन साधुवां, यतियां रा लिख्योड़ा चरित काव्य, कथा काव्य, उत्सव काव्य, नीति उपदेस अर स्तुतिपरक काव्य मिळै।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया आपरी पोथी 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में 50 नैड़ा जैन रचनाकारां रा नांव गिणाया है, जिका राजस्थानी रै प्राचीन काल रै साहित्य री साख ऊजाळी। 13वीं सदी रा केई जैन रचनाकारां अर वांरी रचनावां में विजयसेन सूरि रौ 'रेंवतगिरि रास', पल्हण कृत 'आबूरास', जिनभद्र सूरि कृत 'वस्तुपाल' अर 'तेजपाल प्रबंधावली' जैड़ा अलेखूं नांव अर रचनावां गिणाई जाय सकै। बारहमासा काव्य परंपरा में 'नेमिनाथ बारहमासा' पैली रचना बताई जावै। जैन रचनाकारां में नेमिनाथ अर राजमति रा चरित्र नैं लेयनै मोकळौ काव्य रचीज्यौ है। जैन कवि आपरी रचनावां में वस्तु, घटना, व्यक्ति, विसय री पूरी जाणकारी देवता। विवरणात्मक, भासा री सबळाई, काव्यरूपां री विविधता— रास, रासौ, रासउ, चरिउ, चरित, धमाल, फागु, उत्सव, चउपई जैड़ा नांव आपरी रचनावां में जोड़ नै उणनैं न्यारी निकेवळी बणावण रौ जतन करता। जूना गद्य रा दाखला, गद्य रूपां री बानगी ई आं रचनावां री विसेसतावां रैयी। अैतिहासिकता रा सैनाण, लोकभासा रौ प्रयोग, उपदेसात्मकता अर नैतिक आचरण री सीख आपरी रचनावां में सुभट निगै आवै। 1241 सूं 1584 रौ बगत राजस्थानी साहित्य में वीरगाथा काल रै नांव सूं जाणीजै। जुग बदळाव रै साथै ई साहित्य री दिसा बदळै। इण जुग में पृथ्वीराज चौहान अर मोहम्मद गौरी रै बिचाळै तराइन रौ अंतिम जुद्ध अर उणमें गौरी री जीत होयी। इणसूं जनमानस में प्रबळ वीर भावना जागी। राजस्थान धरमजुद्धां रौ केंद्र रैयौ। जनमानस में अै भाव हा कै राजपूत सासक अर वीर सेनानायक ई वांनै आं थितियां सूं उबार सकै। राजस्थानी कवियां ई वीरां में वीरता जगावण वास्तै वीर रस रौ सिरजण करयौ। इण जुग में केई जैन अर संत कवियां ई वीर रसात्मक रचनावां लिखी। भक्ति अर सिणगार रै साथै ई वीरता आपरौ बागौ पैर साम्हीं आई।

राजस्थानी साहित्य रा वीरगाथा काल में पैला कवि सालिभद्र सूरि होया, जिकां 1241 में 'भरतेश्वर बाहुबलि रास' काव्य री रचना कर रास परंपरा में वीर रस रै वरणन री सरुआत करी। इणीज काल रा दूजा कवियां में सारंगधर कृत 'हमीर रासौ', 'हमीर काव्य', बारूजी सोदा रा वीर रसात्मक 'गीत-छंद', श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छंद' इणी बगत री नामी रचनावां है। 'रणमल्ल छंद' में ईडर रा राजा राव रणमल्ल अर पाटण रा सूबेदार मुजफ्फरसाह रै बिचाळै होया जुद्ध रौ सजीव चित्राम कवि मांड्यौ है। औ अैतिहासिक वीर काव्य अर चरित काव्य

ई है। शिवदास गाडण री 'वचनिका अचलदास खीची री' स्वतंत्रता री प्रतीक रूप रचना है। इणमें वीर राजपूतां रै साथै वीरांगनावां ई आपरै कर्तव्य रौ पाळण करण में लारै नीं रैवै। समाज रा दोनूं ई वरगां (नारी-पुरुस) में देसप्रेम अर स्वतंत्रता री गाढी मनसा अर वीरता रौ दरप, तेज दुस्मण रै साथै जूझ अर आत्मोत्सर्ग रौ जबरौ वरणन होयौ है। बादर ढाढी 'वीरमायण' में आपरै आश्रयदाता दला जोईया अर वीरमजी रै बिचाळै होयोड़ा जुद्ध रौ जबरौ वरणन करयौ है। पदमनाभ कृत 'कान्हड़दे प्रबंध' में जालौर रा सासक सोनगरा चौहान कान्हड़दे अर अलाउद्दीन रै जुद्ध रौ वरणन है। आ मोटी रचना चार खंडां में मिळै। कान्हड़दे केई बरसां तांई जुद्ध कर वीरगति पाई। कान्हड़दे रौ बेटौ वीरमदे ई पिता रै साथै जुद्ध करयौ, उणरौ वरणाव ई इणमें मिळै।

महाकवि चंद बरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासौ' डिंगळ सैली री नामी वीर रसात्मक रचना है। इण रै रचनाकाल नैं लेयनै विद्वान अेक मत कोनी है। इत्तौ अवस है कै औ अेक महाकाव्य री ओळी में आवै जैड़ौ मोटौ ग्रंथ है। वीरगाथा काल में अनेक कवि अर कृतियां रा नांव गिणाया जाय सकै। राजस्थानी रै प्राचीन काल में 'वीसलदेव रासौ' नरपति नाल्ह कृत अेक चावी रचना है। 'ढोला-मारू रा दूहा', 'जेठवा-ऊजळी रा सोरठा' अर केई प्रेमाख्यान ई इण बगत री चावी रचनावां है। 'ढोला-मारू रा दूहा' अेक जूनी लोकगाथा या लोककाव्य रौ रूप है। इणरौ रचनाकार कोई कवि कल्लोल नैं बतावै तौ केई कुशललाभ नैं बतावै। 'वीसलदेव रास' ई अेक प्रेमाख्यान इज है। इणमें अजमेर रा सासक वीसलदेव चौहान अर भोज परमार री बेटी राजमती री कथा रौ वरणाव है। राजमती रौ विरह वरणन, ढोला-मारू रा दूहा री नायिका मारवणी रै विरह सूं कम कोनी। आदिकाल में जैन सैली, चारण सैली रै साथै लोकसैली री रचनावां रौ चलण ई रैयौ। अै रचनावां लोकसैली रा नामी उदाहरण है।

भक्तिकाल (मध्यकाल)

लगोलग जुद्धां सूं जूझतौ मानखौ अबै उण अदीठ सक्ति री सत्ता नैं मानण लागग्यौ हो। देस में विदेसी हमलावरां रौ डर तौ हो इज, पण मांयली कळै ई दिनोदिन बधण लागगी ही। राजा तौ आप-आपरै राज री सीमावां बधावण में लाग्योड़ा हा। केई पथभ्रस्ट सासक मुगलां री अधीनता अंगेजली। धरम बदळण वास्तै जन समाज माथै पूरौ दबाव हो। इण बगत में केई संत संप्रदाय, साधु, जैन मतावलंबी अर भक्तकवि सगुण अर निरगुण भक्ति रै रूप में रचनावां कर जनमानस नैं धीरज बंधायौ, उणमें आस्था अर विस्वास जगायौ कै परमात्मा सब देखै। वौ अबखी वेळा में आपां री सहाय करैला।

इण भक्तिकाल रा कवियां में भक्त सिरोमणी मीरां बाई नैं कुण नीं जाणै। आपरा कृष्ण-भक्ति रा पद तो जन-जन रा कंठहार रैयोड़ा है। आप पदावली, गीतगोविंद टीका, नरसीजी रौ मायरौ, सत्यभामाजी नूं रूसणूं आद रचनावां रौ सिरजण करयौ। कवि दुरसा आढा 'विरुद छिहत्तरी', 'किरतार बावनी', 'राउश्री सुरताण रा कवित्त' जैड़ी रचनावां रची। इणां में आश्रयदातावां रै गुण-जस रौ बखाण करण रै साथै दुखां सूं कळकळीजतै मानखै री अबखायां नैं ई उजागर करीजी है। आप महाराणा प्रताप री वीरता रा दूहा ई लिख्या, जिका घणा चावा है। अकबर रै दरबार में रैवता थकां आप उणां रै खास दुस्मीं महाराणा प्रताप री वीरता रौ काव्य लिख्यौ। आ राजस्थानी कवियां री मोटी विसेसता रैयी है कै वै जिकौ ई लिख्यौ, साच लिख्यौ। आपरै आश्रयदाता री बात दाय आई तौ उणरौ जस गायौ अर वै कीं चूक करी तौ अै कवि वीसर काव्य रै रूप में आपरै राजावां नैं भांडतां अर भूंडतां ई जेज नीं करी। निडरता रै साथै न्याय री बात हरमेस मांडी। कदैई रिछ्या करण वास्तै तौ कदैई उणां नैं अधिकार दिरावण वास्तै तौ कदैई उणां रै साहस नैं बधावण वास्तै कवि कलम अर किरपाण दोनूं सूं साहित्य रै इतिहास री साख उजाळी है।

भक्तिकाल रा कवियां में ईसरदास बारठ रौ नांव सिरैपांत में आवै। औ इज कारण है कै वांनै 'ईसरा सो परमेसरा' रै विरुद सूं बखाण्यौ जावै। आप 'हरिरस' जैड़ौ भक्तिकाव्य समाज नैं सूंप्यौ। 'गुण भागवत', 'गुण आगम', 'देवियांण', 'गुण वैराट' आद आपरी दूजी महताऊ भक्ति रचनावां है।

पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि क्रिसन-रुकमणी री', 'ठाकुरजी रा दूहा', 'गंगाजी रा दूहा', 'दसम भागवत रा दूहा', 'वसदे रावउत', 'दसरथ रावउत' जैड़ी भक्ति रचनावां साम्हीं आवै।

सायांजी झूला कृत कृष्णभक्ति काव्य री 'नागदमण' घणी चावी रचना है। इणमें कृष्ण रै साथै काळिया नाग रै जुद्ध रौ वरणाव कवि रै काव्य-कौसल नैं उजागर करण वाळौ है। आपरी दूजी रचनावां में 'रुकमणी हरण' अर 'रुकमणी मंगळ' ई चावी रैयी है।

भक्तिकाल या मध्यकाल रा कवि अर वांरी कृतियां में वीरभाण रतनू रौ 'राजरूपक', हमीरदान रतनू कृत 'हमीर नाममाळा', 'लखपत पिंगळ', 'पिंगळ प्रकास', 'जदुवंस वंसावली', 'ब्रह्मांड पुराण', 'जोतिस जड़ाव', 'भागवत दरपण', 'भरतरी सतक' अर 'महाभारत रौ अनुवाद' (छोटौ अर बडौ) खास है। इणी भांत करणीदान कविया रौ 'सूरज प्रकास', 'विड़द सिणगार' अर कवि मंछाराम कृत 'रघुनाथ रूपक गीतां रौ' छंदसास्त्रीय ग्रंथ है।

कृपाराम खिड़िया री रचनावां 'छंद चाळकनेची' अर 'राजिया रा दूहा' ई घणी चावी रचनावां है। रामदान लाळस कृत 'भीम प्रकास' अर 'करणी रूपक', किसना आढा कृत 'भीमविलास', 'रघुवरजस प्रकास' अर माधोदास दधवाड़िया री रचना 'राम रासौ' अर 'गजमोख' ई इण काल री महताऊ रचनावां मानीजै।

इण भांत राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रै कवियां रा नांव गिणावां जित्ता ई थोड़ा है। इण काल में अलेखूं रचनाकार साहित्य भंडार नैं भरण रौ लूंठौ काम करयौ। मध्यकाल राजस्थानी भासा रौ सुवरण-काल मानीजै, इणमें भक्ति रचनावां रै साथै वीरता अर सिणगार री महताऊ रचनावां रौ ई सिरजण होयौ। भक्तकवियां री लेखनी ई वीरता रौ वरणन करण में लारै नीं रैयी। भक्तकवि ईसरदास बारठ री 'हाला-झाला रा कुंडळिया' वीर रस री लोकचावी रचना है। कवि रै मांय जित्ता भक्ति रा गुण हा, उणसूं कीं बेसी वीर भावां नैं उकेलण री कला ही।

राजस्थानी कवियां नैं वीर-काव्य रचण रौ गुण जाणै जलम सूं मिळ्यौ व्है, अैड़ौ लखावै। पृथ्वीराज राठौड़ केई भक्ति रचनावां रै साथै 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' रचना करी जिकौ सिणगार रौ काव्य मानीजै। कवि वेलि में इण बात री हामळ ई भरै— 'स्री वरणन पहिले कीजिए गूंथिए जेणि स्रिंगार ग्रंथ'। रुकमणी री वय-संधि औस्था रौ नामी वरणन वेलि में होयौ है। उणरै साथै ई कवि राठौड़ री मोटी मनसा आ रैयी कै आपरा इस्ट रौ वै कीकर सुमिरण करै, तौ भक्ति री भावना इणरै मूळ में रैयी। रुकमणी हरण री बगत कृष्ण, रुकमी अर सिसुपाळ रै साथै होयै जुद्ध रौ ई जबरौ वरणन वेलिकार करै। केई रूपक बांधतां, अलंकारां री छटा रै साथै वेलि में सिणगार, भक्ति अर वीरता तीनूं रसां री त्रिवेणी रा दरसण होवै।

कैवण रौ मतळब औ कै अैड़ौ कोई कवि कोनी जिकौ भक्ति रै साथै वीरता रौ काव्य नीं रचियौ व्है। औ कवियां रौ सुभाव है। प्रकृति है, उणनैं छोड नीं सकै। मध्यकाल में अेकला हमीरदान रतनू री रचनावां माथै बात करां तौ विविध विसयक सोध-ग्रंथ लिख्या जाय सकै। आप छंदसास्त्रीय रचनावां, जसोगान री रचनावां, भक्तिपरक रचनावां, जोतिस री रचनावां रै साथै अनुवाद री जिकी सरुआत करी वा अंजस जोग है। साहित्य रा भूखेत्र में न्यारा-न्यारा काव्यरूपां अर विसय री विविधता साथै लिखणिया अैड़ा केई कवि अर साहित्यकार राजस्थानी में निजर आवै। मध्यकाल में काव्य री तीनूं सैलियां— जैन सैली, चारण सैली अर लौकिक सैली में सिरजण होयौ।

जैन रचनावां में ज्यूं बारहमासा, फागु, रासउ, चउपई, धमाल, ढाळ, चौढाळियउ जैड़ा काव्य रूप रचीज्या, उणीज भांत चारण सैली में रासौ, रूपक, विलास, प्रकास, चरित, वेल, रसावळा, झूलणा, नीसाणी, झमाल, कुंडळिया, कवित्त, दूहा अर छंदां रै नांव माथै अनेक काव्यरूपां में अखूट राजस्थानी रचनावां साम्हीं आवै।

लौकिक सैली री बात आवै तौ मध्यकाल में भक्ति आंदोलन रौ अैड़ौ रूप निगै आवै जिणमें केई संत संप्रदायां री महताऊ भूमिका पण रैयी। दादू पंथ रा प्रवर्तक संत दादूदयालजी, संत रज्जबजी, संत लालदासजी, संत मावजी, चरणदासजी, सिद्ध जसनाथजी अर रामस्नेही संप्रदाय में अनेक संत होया जिणां में रामचरण दास, हरिराम दास,

दयालदास, संत दरियावजी आद नामी है। बिश्नोई संप्रदाय रा प्रवर्तक संत जांभोजी ई आपरा सबद अर वाणियां सूं लोककल्याण रौ काम करयौ। इण बगत में केई जैन साधु-संत ई आपरी रचनावां लोकसैली में लिखनै जनता में भक्ति जगावण रौ काम करयौ। संतां री 'मंगळ-विवाहलो', 'भक्तमाळ', 'परिचयी', 'वाणियां', 'साखी', 'सबद' अर 'सिलोका' जैड़ी रचनावां राजस्थानी साहित्य भंडार नैं भरण रौ अंजस जोग काम करयौ। लोकभासा में आपरी बात कैवणी, नैतिक आचरण, सगुण अर निरगुण भक्ति रा नेम-धरम अर ईस्वर रै वास्तै आस्था अर विस्वास आं संतां री रचनावां रौ मूळ ध्येय रैयौ। जीव दया, परोपकार, पर्यावरण जैड़ा विसय ई आंरी रचनावां रा रैया। जित्तौ लूंठौ साहित्य चारण अर जैन सैली में लाधै बित्तौ इज सरावण जोग साहित्य संत कवियां रौ है। उणां रा भक्ति पदां में जीवण रौ सार निजर आवै। लोक सैली में भक्ति री निस्छळ अर निरमळ गंग-तरंगां में मानखै रा सगळा पाप धुप जावै। भवसागर पार करण वाळौ जहाज है— संत-काव्य।

इण भांत मध्यकाळ में सूरां, सापुरुसां अर सतियां री वीर वसुंधरा रै कारण अलेखूं कवियां री लेखणी रै बळ वीर, सिणगार, नीति अर भक्ति रौ साहित्य रचीज्यौ, तौ संत संप्रदाय ई धरम री जड़ नैं हरी करी। इणरै साथै ई लोक-साहित्य आपरी सगळी विधावां रै साथै पांगरयौ। लोक-साहित्य तौ लोक रौ साहित्य है। वौ लोक रै साथै ई जलम्यौ अर तर-तर बधतौ गियौ पण अबार तांई रौ लोक-साहित्य मौखिक सरूप में हो, अबै धींरै-धींरै सबदां में जड़ीज नै वौ आपरै सबळ रूप में साम्हीं आय रैयौ है। औ लोक-साहित्य पोथ्यां में अंवेरीजण लाग्यौ अर पांगरतां ई अेक हरियल रूंख ज्यूं फळ्यौ अर फूल्यौ। भासाई दीठ सूं राजस्थानी अपभ्रंस सूं न्यारी होवती गई। 16वीं सदी रै पछै तौ वा गुजराती सूं ई न्यारी होयनै अेक स्वतंत्र भासा रै रूप में निजर आवण लागी ही, अबै आ भासा आपरै बाळपणै रा संगी-साथियां नैं छोड-छिटकाय राती-माती निजर आवण लागी ही।

मध्यकालीन गद्य

राजस्थानी रौ पद्य-साहित्य जित्तौ सिमरथ है, गद्य-साहित्य ई उत्तौ इज सिमरथ अर रातौ-मातौ है। राजस्थानी में प्राचीन गद्य रूप में विविध विसयक गद्य मिळै। जूनै राजस्थानी गद्य नैं विसय री दीठ सूं पांच भागां मांय बांटीज्यौ है—

धारमिक गद्य मांय टीका, टब्बा, टीप्पण, बालावबोध, पट्टावली अर गुर्रावली आवै। कोई भी धार्मिक ग्रंथ नैं समझण खातर उणमें कथावां दी जावती, उणां री विरोळ मूळ पाठ रै हेठै या अलग सूं देवता, वांनै टीका कैवता। उणीज भांत टब्बा मूळ पाठ रै हासियै माथै लिखीजता। टाबरां नैं बोध करावण सारू, वांनै धरम अर सदाचार री सीख 'बालावबोध' सूं दिरीजती। जातक कथावां रै रूप में इणरौ मैतव रैयौ है। इणमें सं. 1411 में खरतरगच्छ रा तरुणप्रभ सूरि रौ 'षडावश्यक बालावबोध' सब सूं जूनौ मान्यौ जावै। इणी भांत गुरु-चेलै री परम्परा नै निभावण सारू गुरु रै पछै चेलै नै पाट (गादी) माथै बैठायौ जावतौ, उणरै इतिहास, गुरु अर चेलै रै परिचै नै इण विधा में परोट्यौ जावतौ, उणनैं गुर्रावली कैवता। जैन परम्परा मांय वंशावली रौ दूजौ रूप गुर्रावली रौ रैयौ है। केई ओक्तिक ग्रंथ, कथा-ग्रंथ ई इण काल में लाधै।

अैतिहासिक गद्य मांय वात, ख्यात, वचनिका, दवावैत, विगत, वंसावली जैड़ी गद्य विधावां आवै। 'वात' न्यारा-न्यारा विसयां नै लेय'र रचीजी है। आधुनिक जुग री कहाणी परंपरा री जड़ां जूनी वातां में गैरी गडियोड़ी है। अै वातां अैतिहासिक, अर्द्ध अैतिहासिक, धारमिक, नीति प्रधान अर जीवण रै हरेक प्रसंग सूं जुड़्योड़ी होवती। 'ख्यात' नै चरित्र ग्रंथ अथवा उर्दू-फारसी रै 'नामा' या 'आइन' रै नैड़ौ मान्यौ जाय सकै। ख्यात में घटना वरणन, चरित्र वरणन रै सागै अैतिहासिक तथ्यां नै भी महत्त्व दिरीज्यौ है। इण में सिसोदियां री ख्यात, मुहणोत नैणसी री ख्यात, महाराजा मानसिंह री ख्यात, जोधपुर री ख्यात, उमरावां री ख्यात, बांकीदास री ख्यात सिरै ओळी में आवै। 'विगत' रै मांय अेक इज ठौड़, घटनावां, मिनखां अथवा जातियां रौ विगतवार वरणन करियौ जावै। इणमें मारवाड़ रा परगनां री विगत, मेवाड़ रा भाखरां री विगत, कछवाहा सेखावतां री विगत आद आवै। अेक इज परिवार कै जाति

रौ जद अेक वंस-बिरछ रूप में पीढी-दर-पीढी रौ गद्यात्मक वरणन करियौ जावै तौ वा रचना वंसावळी रै नांव सूं ओळखीजै। राठौड़ां री वंसावळी, महारावळ री वंसावळी, झालां री वंसावळी, राठौड़ राजावां री वंसावळी, राजपूतां री वंसावळी आद।

हकीकत सूं अरथ जथारथ रौ वरणन होवै। इणरौ उद्देस्य कोई घटना या खास बात री जाणकारी देवणी होवै। इणमें मनसब री हकीकत, हाडां री हकीकत, पातसाह औरंगजेब री हकीकत उल्लेखजोग है। इणीज भांत '**हाल**' में भी हकीकत रै दांई कोई खास घटना रौ ब्यौरौ दिरीजै। 'सांखला दहियां सूं जांगळू लियौ तेरौ हाल' इण रीत री अेक खास रचना है। 'वचनिका' सबद संस्कृत रै 'वचन' सबद सूं बणियौ है। गद्य-पद्य मिश्रित रचना जिणनैं संस्कृत में चम्पू काव्य भी कैयौ जावै। इणमें अचलदास खीची री वचनिका, वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासौत री, जिन समुद्र सूरि री वचनिका, माताजी री वचनिका आद आवै। 'दवावैत' सबद री व्युत्पत्ति अरबी भासा रा सबद 'वैत' सूं मानी जावै। दवावैत में उर्दू अर फारसी रा सबद घणा मिळै। राजस्थानी भासा री सैं सूं जूनी दवावैत 'नरसिंहदास गौड़ री दवावैत' मानीजै। इणरै पछै 'महाराजा अजीतसिंह री दवावैत', 'असमाल देवड़ा री दवावैत', 'महाराजा लखपत री दवावैत' चावी रैयी।

जूना राजस्थानी गद्य में अेक रूप **कलात्मक गद्य** रौ ई रैयौ। इणनैं मन-बिलमाव रौ गद्य ई कैवै। कथा-वारतावां में प्रेम, वीरता, भक्ति अर हास-परिहास रौ रूप ई देखीजै। गद्य रै साथै रूपाळौ पद्य, तौ केई ठौड़ वरणन प्रधान गद्य में ओपमावां री झड़ी लगाय देवै। खीची गंगेव निंबावत रौ दोपहरौ में निंबावत सरदार रै दोपारां रै भोजन रौ सजीव अर सरब ओपमा सरूप वरणन है, तौ 'राजा राउत रौ बात बणाव' में कुंवर रौ रूप वरणन, सिकार वरणन रा दाखला पढण जोग है। राजस्थानी कलात्मक गद्य जित्तौ रूपाळौ, पढण में असरदार लागै, तौ कठै-कठैई इणमें लोकरंजण ई जुड़्योड़ौ होवै। अैड़ी रचनावां में पृथ्वीराज वाग्विलास, माणिक्य सुंदर सूरि कुतुहलम, सभाशृंगार, मुत्कलानुप्रास है। आं रै मांय अनेक विसयां रौ सरवांग पूरण मनोरम वरणन मिळै। बिरखा, सटरितु, बारहमासा रै रसवती वरणन रै साथै नगर वरणन ई होवै।

अभिलेखीय गद्य रै मांय सिलालेख, ताड़पत्र, भोजपत्र, ताम्रपत्र या दूजा धातुपत्रां माथै खुद्योड़ौ गद्य आवै। इण तरै मिळण वाळौ साहित्य राजाज्ञावां, आदेसां, फरमाण, दान-पत्र, सम्मान-पत्र, पट्टा अर परवानां रै रूप में मिळै। जूना गद्य में अभिलेखां रौ गद्य घणौ महताऊ है। विविध विसयक गद्य मांय आयुर्वेद, जोतिस, व्याकरण जैड़ा अलग-अलग विसयां सूं जुड़िया ग्रंथ जैन अर जैनेतर सैली में मिळै। इणां में जोतिस, वैद्यक, व्याकरण विसयक गद्य मिळै। जोतिस में पंचांग, भौगोलिक जाणकारियां, जलमपत्रियां आद ई महताऊ ठौड़ राखै। इण तरै प्राचीन अर मध्यकालीन राजस्थानी गद्य रौ संसार घणौ लांठौ है। मध्यकाल में राजस्थानी भासा में बत्तौ अर असरदार गद्य रौ सिरजण होयौ। नांव अर रूप न्यारा-न्यारा रैवता थकां ई कदैई रूपगत अेकता तौ कदैई विसयगत अेकता रै कारण आपस में फूल री पांखड़ियां ज्यूं जुड़्योड़ी अै विधावां राजस्थानी साहित्य में आपरी सौरम बिखेरी। जूनै राजस्थानी गद्य री आपरी अलायदी ओळख है, जिकी दूजी भासावां रा साहित्य में स्यात ई लाधै। इणरै साहित्य भंडार सूं कित्ता-कित्ता ग्रंथ-रत्नां नै परोटतां इतिहासकारां राजस्थान प्रदेस रै इतिहास रौ रूप संवारियौ अर राजस्थानी साहित्य आं विधावां रै कारण आपरौ आपौ थापियौ।

आधुनिक काल

इण काल में दोय न्यारी थितियां में न्यारी काव्य-धारावां अर न्यारा विचारां नै बळ मिळ्यौ। आजादी सूं पैली रौ काल अर आजादी रै पछै रौ काल। दोनूं बगत चेतना जगावण वाळा हा, पण विसय न्यारा हा। मोटै रूप सूं औ काव्य-चेतना रौ जुग हौ। इण काल में देस माथै अंग्रेजी हकुमत, उणरा अत्याचारां अर अन्यावां सूं मानखौ दुखी हौ। 'फूट घालौ अर राज करौ' वाळी दोगली नीत नैं अपणायनै गोरां केई रियासतां माथै हक जमाय लियौ। केई राजा तौ

अंग्रेजां रै हाथ रा रमतिया हा। केई राजा, सामंत, अंग्रेजां साथै राजीपा रौ सौदौ कर बैठा हा। इण जुग में ई देसप्रेमियां अर स्वाधीनता नैं पूजण वाळां रौ घाटौ कोनी हौ। राजस्थानी कवि आथूणी हवा साथै उठता काळा धूंवां सूं अणजाण कोनी हा; गोरी सरकार रै काळा मन नैं वै चोखी तरियां जाणता हा। अबै राजावां नैं विरुदावण री दरकार कोनी ही। कवियां परंपरागत काव्य री लीक छोडनै अंग्रेजी सत्ता रै विरोध में काव्य करण लागा। अंग्रेजां री खोटी नीतियां अर वांरा कानून आगै तळ-तळीजतै मानखै नै न्याव दिरावण वास्तै आं कवियां री कलम चाली। देस में जनजागरण, देसप्रेम, वीरता अर स्वतंत्रता रौ पाठ पढावण वाळा इण जुग रा पैला कवि सूरजमल मीसण होया। वीर रसावतार रै रूप में चावा इण कवि री 'वीर सतसई' रौ अेक-अेक दूहौ देसभक्ति अर स्वतंत्रता री सीख देवै, तौ कायरां-उर छैलका करै जैड़ा। रामनाथ कविया 'द्रोपदी-विनय' रै मिस नारी रै विद्रोही रूप नैं दरसायो। शंकरदान सामौर रा गोळी हंदा गीतां में अंग्रेजां नैं झूंपड़ियां रा धाड़ायती बताईज्या तौ केसरीसिंह बारठ, हिंगळाजदान कविया, माणिक्यलाल वर्मा, विजयसिंह पथिक जैड़ा कवियां अंग्रेजी सत्ता रौ खुलासौ करतां जनचेतना जगाई अर जनता में आजादी रौ सुर भर्‌यौ।

जनकवि ऊमरदान लाळस प्रगतिशील काव्यधारा री सरूआत करी। समाज नैं सांस्कृतिक अर सामाजिक उत्थान सारू चेतायौ। धरम रै नांव माथै होवण वाळा पाखंडां रौ खुलासौ करतां समाज-सुधारक अर जनकवि रौ काम सार्‌यौ।

राजस्थान रा कवि हरमेस थाकल मिनखां रौ साथ दियौ, रियासतां रा सामंतां, जागीरदारां, ठाकरां रा हेठवाळिया करसां अर मजदूरां रौ साथ देवता समाज रा आं ठेकैदारां नैं आडै हाथां लिया। जोसीला सबदां में वांनै फटकारण रौ काम गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' जैड़ा जनकवि ई कर सकै। समाज रा हेठला तबकां रौ साथ देवणिया कवियां में रेवतदान चारण, उदयराज उज्ज्वळ, हीरालाल शास्त्री अर जयनारायण व्यास जैड़ा कवि आगै आया। देसप्रेम, अेकता, अधिकारां वास्तै सावचेत करणौ, अशिक्षा नैं मेटणी, काम-धंधा अर मैनत री जै बोलावतां वरगभेद अर नारी जागरण री बात आंरी रचनावां में करीजी।

गांधीजी री अगवाई में देस री आजादी खातर जिकी लड़ाई छिड़ी, अठै रौ साहित्यकार ई उणसूं अळगौ अर अछूतौ नीं रैयौ। गांधीजी रै सत्य, अहिंसा, न्याय अर वांरा आदर्शां नैं लेयनै साहित्यकारां बोहळौ काव्य लिख्यौ। साथै ई राजनीतिक आंदोलन, समाज-सुधार, अछूतोद्धार, सामाजिक अेकता, कुटीर उद्योगां रै साथै गांधीवादी विचारां सूं ओतप्रोत कवियां अठै रामराज्य री कल्पना ई करी। आं सगळां विसयां नैं लेयनै राजस्थानी में सैकड़ां रचनावां लिखीजी।

साहित्यिक दीठ सूं आधुनिक जुग में केई नूंवी चिंतन धारावां रौ जलम होयौ। देस री आजादी पछै नूंवी काव्य चेतना री सरुआत होयी। प्रकृति संचेतनापरक काव्य में पकृति रौ मानवीकरण करीज्यौ। प्रकृति साथै मिनख रौ आद-जुगाद संबंध रैयौ है। मानखै रै हिरदै में लुक्योड़ी भावनावां प्रकृति रै कोमल-कठोर अर रूप-विडरूप रै मिस प्रगट करीजी है। प्रकृति-काव्य कै छायावादी-काव्य री अठै लूंठी परंपरा रैयी। इण काल रा कवियां में- चंद्रसिंह बिरकाळी (बादळी, लू), नारायणसिंह भाटी (सांझ), नानूराम संस्कर्ता (कळायण, दसदेव), गजानन वर्मा (सोनो निपजै रेत में), कन्हैयालाल सेठिया (मींझर), कल्याणसिंह राजावत (परभाती), रेवतदान चारण (बिरखा-बीनणी), सुमेरसिंह शेखावत अर डॉ. मनोहर शर्मा आद रा नांव गिणाया जाय सकै।

प्रबंध-काव्यां रै साथै मुक्तक कविता रौ भी जोर रैयौ। प्रबंध-काव्य में रामायण, महाभारत, उपनिषद् अर पौराणिक विसयां नै आधार बणायनै धारमिक प्रबंध-काव्य लिखीज्या, तौ अैतिहासिक, अर्द्धअैतिहासिक, लोक-काव्य अर कल्पनाऊ प्रबंध-काव्यां रौ सिरजण ई अठै होयौ। अमृतलाल माथुर री 'गीत रामायण', मेघराज मुकुल री 'सैनाणी', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कुंजा', 'अमरफळ', 'पंछी', 'मरवण', महावीर प्रसाद जोशी री 'बिंदराबन', 'द्वारका', 'मथरा', 'अंतरधान', श्रीमंत कुमार व्यास री 'रामदूत', सत्यप्रकाश जोशी री 'राधा', सत्यनारायण

'अमन' प्रभाकर री 'सीसदान', गिरधारीसिंह पड़िहार कृत 'मानखौ', करणीदान बारठ री 'शकुंतला' इत्याद प्रबंध-काव्यां रै रूप में मोटी अर लांबी काव्य-रचनावां लिखण री अठै लूंठी परंपरा रैयी है।

आधुनिक-जुग रा कवियां में कन्हैयालाल सेठिया री कविता में नूंवा बिंब-विधान साथै जीवण-दरसण रा भाव है। देस अर समाज रा बदळता रंग-रूप, ढब, जीवणगत, मानवी भावनावां रा सैंस रूप परगट करण में आधुनिक कवियां री लांबी पांत है, जिणमें तेजसिंह जोधा, मणि मधुकर, ओंकारश्री, पारस अरोड़ा, गोरधनसिंह शेखावत, भगवतीलाल व्यास, मोहम्मद सदीक, गजानन वर्मा, बुद्धिप्रकाश पारीक, गणपतिचंद्र भंडारी, किशोर कल्पनाकांत, कल्याण सिंह राजावत, सुमनेस जोशी, सत्यप्रकाश जोशी, रघुराजसिंह हाडा, प्रेमजी प्रेम, सीताराम महर्षि, कानदान कल्पित जैड़ा अलेखूं कवियां आधुनिक कविता में नूंवा भावबोध, बिंब-विधान, प्रतीकां नैं लेयनै राजस्थानी कविता में नूंवा प्रयोग करया। धोरां वाळा देस नैं जगावण वास्तै कदैई मनुज देपावत नैं आगै आवणौ पड़्यौ तौ कदैई 'मानखै' री ऊंडी नींव राखण नैं गिरधारी सिंह पड़िहार जैड़ा सादगी वाळा कवि नैं मुखरित होवणौ पड़्यौ। श्रीमंत कुमार व्यास नैं आपरी बात द्रोपदी, मीरां, मांडवी अर कैकयी रै ओळावै कैवणी पड़ी।

आधुनिक राजस्थानी कविता नैं दूजी भासा री कवितावां रै सैंजोड़ लावण नै, उणरी कूंत करण वास्तै कविता में नूंवा-नूंवा रूप उकेरीजता रैया। बगत रै परवाण कवियां समाज री विडरूपता माथै रोस करता भांत-भांत सूं भावां री अभिव्यक्ति दी है। आं कवियां में मोहन आलोक, चंद्रप्रकाश देवल, सत्येन जोशी, हरमन चौहान, अस्तअलीखां मलकांण, पुरुषोत्तम छंगाणी, वीरेन्द्र लखावत, सत्यदेव संवितेन्द्र, श्याम महर्षि, सांवर दइया, नंद भारद्वाज, मीठेस निरमोही, आईदानसिंह भाटी, चैनसिंह परिहार, जुगल परिहार, ज्योतिपुंज, कुंदन माली, अर्जुनदेव चारण, शिवराज छंगाणी, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, चेतन स्वामी, बद्रीदान गाडण, हरीश भादाणी, बी. अेल. माली 'अशांत', मालचंद तिवाड़ी, लक्ष्मणदान कविया, रामस्वरूप किसान, मुकुट मणिराज, दलपत परिहार, वासु आचार्य, ओम पुरोहित 'कागद', शंकरसिंह राजपुरोहित, शिवराज भारतीय, नीरज दइया, अशोक जोशी 'क्रांत', गिरधरदान रतनू दासोड़ी इत्याद आज तांई रा राजस्थानी कवि इण आधुनिक जुग में आवै।

आधुनिक कविता में प्रकृति चेतनापरक काव्य, प्रगतिशील काव्य, छायावादी काव्य, प्रतीकात्मक सैली रौ काव्य, नुंवै भावबोध अर जुगबोध रौ काव्य लिखीज्यौ। पारम्परिक काव्य रै साथै नूंवी कविता रौ बानौ पैराय कवियां जीवण रा सगळा प्रसंगां सूं जुड़्योड़ी रचनावां लिखी, आथूणै साहित्य में होवण वाळा नूंवा प्रयोगां रौ असर मायड़ भासा माथै ई पड़ियौ, दूजी भासावां रै देखा-देखी उणां सूं सीख लेयनै राजस्थानी कवियां ई नूंवा-नूंवा काव्य रूपां नैं परोटण रा जतन करया, आपरी बात नैं कैवण री न्यारी आंट राखणिया कवियां में नारायणसिंह भाटी, तेजसिंह जोधा, पारस अरोड़ा, चन्द्रप्रकास देवल, मालचंद तिवाड़ी, अर्जुनदेव चारण रा नांव गिणाया जाय सकै, जिणां री कवितावां में चिंतन री नूंवी रीत निजर आवै।

राजस्थानी **गजल** प्रीत री कसक, मैफिलां री गायकी नैं छोडनै आम आदमी रै जीवण री गजल बणगी। आज री व्यवस्था रै खिलाफ बगावत रा तीखा तेवर रौ अंदाज अर व्यंग्य रौ मारक सुर आं गजलां में जबरौ दीखै। गजलकारां में सत्येन जोशी, नवल जोशी, रामेश्वरदयाल श्रीमाळी, श्यामसुंदर भारती, भागीरथ सिंह भाग्य, जुगल परिहार, राजेन्द्र स्वर्णकार, सत्यदेव 'संवितेन्द्र' आद आवै। **डांखळा** पांच ओळी वाळौ वरणिक छंद है। अंग्रेजी रै लिमरिक छंद री बुणगट नैं अपणायनै राजस्थानी कवियां इणमें रचना रची। आपरी भासा नैं सिरमथ बणावण खातर दूजी भासावां रा छंदां नैं अपणाय आज रा कवियां भांत-भांतीला मनबिलमाऊ विसयां माथै 'डांखळा' लिखिया। राजस्थानी में हास्य-व्यंग्य आंरौ खास विसय रैयौ है। मोहन आलोक, विद्यासागर, श्यामसुंदर भारती, बजरंग सारस्वत 'गंगाशहरी' रा डांखळा घणा सराईज्या। शिव पारीक री पोथी 'गळै में अटक्यौ डांखळौ' नाम सूं सांम्ही आवै। डांखळौ चुटकलानुमा काव्य रौ रूप है। आज री नूंवी चिंतन सैली अर सबदां री पकड़ आं डांखळां में निजर आवै।

काव्य-रूपां री इण जातरा में राजस्थानी कवियां जापानी छंद '**हाइकू**' में ई आपरी हथौटी कसण रा जतन करै। भारत सूं चीन अर जापान में गयोड़ा बौद्ध धरम रा अनुयायी धरम उपदेस अर सीख री बात नैं थोड़ाक सबदां में कैवता। इण रचना-बंध नैं 'हाइकू' नांव दिरीज्यौ, जिणरी जड़ां भारतीय साहित्य सूं ई सींचीजी है। ध्यान, गैरा चिंतन सूं मन रा झीणा विचारां नैं कम सबदां में कैवण री कला रौ नांव 'हाइकू'। फगत (17) सतरा आखरां रौ नैनौ-सोक वरणिक छंद है- हाइकू। इणमें भासा अर भावां री सूक्ष्मता है। सांवर दइया, लक्ष्मीनारायण रंगा, नीरज दइया, भंवरलाल भ्रमर, सुमन बिस्सा, घनश्याम नाथ कच्छावा जैड़ा कवियां 'हाइकू' में आपरा विचार राख्या है। **सोनेट** राजस्थानी कविता आज री दौड़ में लारै नीं रैय जावै, इणरी पूरी खेचळ अठा रौ कवि करतौ रैवै। वाणी रौ वर तौ मां सुरसत रा इण लाडलां नैं मिळ्योड़ौ है ई। 14 (चवदै) ओळी रा इण छंद में जीवण री जथारथ थितियां अर घटनावां रौ वरणाव, आपरै च्यारूंमेर रै वातावरण रौ सांच अर आपरै हियै रा निजू संबंधां री बात नैं घणा मरम परसी सबदां में कथीजण री कळा राजस्थानी कवि मोहन आलोक री थाती है। 'सौ सोनेट' नांव री इण पोथी में 102 सोनेट छंद है। न्यारा-न्यारा विसयां में सबदां री कळा अर भावां री परगळाई है। अंग्रेजी छंद नैं अपणाय आपरै हियै री बात उकेरण में राजस्थानी लारै नीं रैया। पढती बगत ई कठैई अबखायी नीं लखावै कै इण छंद री पकड़ में राजस्थानी कवियां कीं खामी राखी होवै। इणरै पछै **बीजीकावां** ई राजस्थानी में रचीजी, जिणमें साव थोड़ाक सबदां में सार री बात कैवणी होवै। हिंदी री 'क्षणिकावां' ज्यूं जीवण रा आम-फेम प्रतीकां अर बिम्बां नैं नूंवा, अबोट आखरां नै अरथ देवती, सचोट तीखी व्यंग्य भरयोड़ी, थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता राखण वाळी अै 'बीजीकावां' जीव जगत रा न्यारा-न्यारा रूपां नै उकेरती निजर आवै। लक्ष्मीनारायण रंगा री बीजीकावां सरावण जोग है। ओम पुरोहित 'कागद' री 'कुचरणी' में अरथावूं कुचरण्यां रौ मापौ ई कोनी। दौलतराम डोटासरा रा '**टुणकला**' ई जूना ओखाणां ज्यूं अरथावै जिणमें सार बात कहीजी है। राजस्थानी में भासाई सबदां रौ औ साव नूंवौ प्रयोग है।

इण भांत आधुनिक राजस्थानी काव्य साहित्य में काव्य रा नूंवा रूपां रौ प्रयोग ई साहित्य भंडार नैं सिमरथ करैला अर इण भासा री कूंत करण में आज रा अै काव्य-रूप आपरी सैनरूपता रौ म्यानौ देवैला। आधुनिकता री दौड़ में आगै बधता साहित्य रा पग मंडणा आपरी मंजिल लग पूगैला।

राजस्थानी साहित्य में नारी लेखण री बात करां तौ केई सोध-प्रबंध त्यार होय जावै। मध्यकाल री मीरां सूं जीवण री सीख लेयनै अलेखूं महिला रचनाकार साम्हीं आवै। सगुण-निरगुण भगती रा सुरां नैं आपरा पदां में अंवेरती दया बाई, सहजो बाई, गवरी देवी, स्वरूपां बाई, राणा बाई, इणां सूं ई पैली सोढी नाथी अर रसिक बिहारी रा नांव भक्तिमती कवयित्रियां में आवै, तौ पतिव्रत धरम, तीज- तिंवार, देसप्रेम अर प्रकृति रा मोवणा चितराम ई भगती नीति रै साथै निजर आवै। आं मांय दीप कुंवरी, उमादेवी जैड़ी रचनाकार साम्हीं आई।

आज नारी सामाजिक विडरूपता, अबखायां नैं आपरी रचनावां पेटै उकेरै। सामाजिकता रै ढांचा में दोवड़ी विचारधारा में पीसीजती नारी आज आपरी लेखणी सूं उण असमानता नैं नकारै। जथारथ वरणन में नारी लेखण आपरी व्यथा री कथा कैवै। 'धर मजलां धर कूचां' रै साथै नूंवी सोच, मानवी-संघर्ष, मिनखपणा री दीठ रौ लेखौ करती आपरी दिसा में चाल रैयौ है। डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ 'कैक्ट्स मांय तुळसी' काव्य संकलन सामाजिक विसंगतियां नैं उकेरै। डॉ. सावित्री डागा, संतोष मायामोहन, डॉ. कमला जैन, वंदना शर्मा, डॉ. अरुणा शर्मा, प्रतिभा व्यास, सुमन बिस्सा, कविता किरण, मोनिका गौड़, राजेश दुलारी सांदू, कमला कमसिन, डॉ. प्रकाश अमरावत, डॉ. शारदा कृष्ण, किरण राजपुरोहित 'नितिला', रीना मेनारिया, ऋतुप्रिया, छैल कंवर चारण, डॉ. लीला मोदी आद अनेक महिला रचनाकारां री काव्य प्रतिभा गीत, कविता, गजल अर छंदां रै रूप में साम्हीं आवै। आज समाज रूपी रथ रौ दूजोड़ौ पहियौ ई लेखणी री धुरी बणाय साथै संभग्यौ है। नूंवी चेतना रै संचार संचरियौ अर अबै समाज नैं आगै बधण सूं कुण रोक सकैला। राजस्थानी साहित्य रा रूंखड़ां नैं हरियल करणियां डाळियां, पानड़ा, कूंपळ, फूल अर फळां रै रूप में आपरी न्यारी ठौड़ फाबतां सिरजणहारां री साख भरूं तौ म्हारौ सौभाग है। बाल-साहित्य में ई

राजस्थानी लेखन लारै कोनी। टाबरां रै वास्तै हेत-अपणायत अर शिक्षाप्रद कवितावां री बानगी इणमें देखीजै।

आं मांय सूं केई कवि परंपरागत काव्य लिखै, तौ केई जथारथवादी काव्य रै नैड़ा ढूकै। केई पकृति रा प्रेमी इण रा कण-कण नैं आखरां ढाळै, रूंखां री महिमा गावै, तौ केई मैणत रा नारा देवै। केई संस्कृति री रूपाळी छिब तीज-तिंवारा में देखनै उणरा गीत गावै तौ केई नूंवा भाव-बोध साथै अनाम कविता, मिनी कविता नैं सिरजै। मानवी भावनावां साथै जुड़ नै झीणी संवेदना नैं कविता रा सुर बणावै, तौ केई समाज री दसा अर दिसा माथै छीजतौ निजर आवै। कोई विरलौ कविता नैं साचै संचै ढाळै, तौ केई फकत नांव खातर च्यार ओळ्यां मांड नै कवि बण जावणौ चावै। कीं होवौ, आधुनिक राजस्थानी कविता री थिर जातरा करता आगै बधता आं कवियां री कोरणी मंड्या आखरां में आधुनिक भावबोध, नवजीवण अर नूंवै भावबोध, कथ्य, रचाव, विचार, भासा, बिंब अर सिल्प सरावण जोग अर आपरी निकेवळी पिछाण बणावण जोग है।

इण भांत आधुनिक काव्य री खास प्रवृत्तियां में जथारथवादी काव्य, प्रगतिशील काव्य, नवजीवण रौ काव्य, नव भावबोध रौ काव्य, हास्य-व्यंग्यात्मक काव्य, प्रकृतिवादी काव्य, नूंवां बिम्ब अर प्रतीक विधान में लिखीज्यौ तौ परम्परागत काव्य में भक्ति, नीति, प्रकृति, वीरता, सिणगार रौ काव्य ई बरोबर लिखीजतौ रैयौ। गिरधरदान रतनू दासोड़ी जैड़ा कवियां रै पाण डिंगळ रौ डमरू छंदां री छौळां रै पाण आपरौ नाद गुंजावै, तौ छंदमुक्त कवितावां ई आधुनिक राजस्थानी साहित्य में मोकळायत में रचीजण लागी है।

आधुनिक राजस्थानी गद्य

आधुनिक राजस्थानी गद्य री सरुआत वीर रसावतार कवि सूर्यमल्ल मीसण रा लिख्योड़ा कागदां (पत्रां) सूं मानीजै। आप राजनीतिक चेतना अर कर्तव्य पुकार सूं सराबोर पत्र लिखनै देसी राजावां नैं भेज्या। वां कागदां री भासा में नूंवै गद्य रा अैनाण लाधै। आधुनिक गद्य में अै कागद नींव रा मजबूत भाटा बण गद्य रूपी महल नैं ऊभौ करण में पैलौ सैयोग करै। आधुनिक राजस्थानी में ई दूजी भासावां रै ज्यूं गद्य री विविध विधावां में सिरजण होवण लाग्यौ। इण बगत में घणकरा प्रवासी राजस्थानी आपरी मायड़ भासा रौ मान बधायौ। इणमें शिवचंद्र भरतिया अेक अैड़ौ नांव है जिका कहाणी, उपन्यास, नाटक जैड़ी विधावां री सरुआत राजस्थानी में करी। उण पछै तौ राजस्थानी मांय उपन्यास, कहाणी, नाटक, निबंध, अेकांकी, रेखाचित्राम, संस्मरण, बाल-साहित्य जैड़ी विधावां दीठाव में आई। अठै राजस्थानी री आं विधावां री कीं जाणकारी टाबरां नैं करावणी चावूं।

राजस्थानी मांय पैलौ **उपन्यास** 'कनक-सुंदर' मान्यौ जावै। सन् 1903 में शिवचन्द्र भरतिया इण उपन्यास में उण बगत री बुरायां रै निवारण खातर सुधारवादी दीठ राखी है। उपन्यासकार इण मांय बालब्यावं, दायजौ, अनमेळ ब्याव आद नै पाठकां सांम्ही ल्यावण रौ जतन करियौ है। राजस्थानी रौ दूजौ उपन्यास श्रीनारायण अग्रवाळ रौ 'चम्पा' है जिणमें समाज-सुधार री भावना राखीजी है। इण पछै श्रीलाल नथमल जोशी रा 'आभै पटकी', 'अेक बीनणी दो बीन' अर 'धोरां रौ धोरी' उपन्यास पाठकां साम्हीं आया। अन्नाराम सुदामा रौ 'मैकती काया मुळकती धरती', 'मेवै रा रूंख?', 'आंधी अर आस्था', 'डंकीजता मानवी', 'घर संसार', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र रा 'हूं गोरी किण पीव री', 'जोग संजोग' अर विजयदान देथा रा 'तीडौ राव', 'मां रौ बदळौ' अर 'आठ राजकंवर' जैड़ा लोक उपन्यास साम्हीं आया।

नूंवै जुग मांय नूंवा विसयां नैं लेयनै उपन्यास साम्हीं आया। बी. एल. माली 'अशांत' रा च्यार उपन्यास 'मिनख रा खोज', 'बैजू', 'अबोली' अर 'बुरीगार निजर' साम्हीं आया। मालचन्द तिवाड़ी रौ 'भोळावण', छत्रपति सिंह रौ 'तिरसंकू', पारस अरोड़ा रौ 'खुलती गांठां', दीनदयाल कुंदन रौ 'गुंवारपाठौ', सत्येन जोशी रौ 'कंवळपूजा', भूरसिंह राठौड़ रौ 'राती घाटी', रामनिवास शर्मा रौ 'काळ भैरवी', करणीदान बारहठ रौ 'मंत्री री बेटी', अब्दुल वहीद कमल रौ 'घराणौ' सूं आगै बधेपौ कर उपन्यास साहित्य मांय नूंवा रचाव होया। इण विधा माथै नूंवा लिखारा

भी आपरी कलम सवाई करी, जिणमें सुरेन्द्र अंचल रौ 'सुपना रौ सायबौ', ओमदत्त जोशी रौ 'पाणी पीजै छाण, देवकिशन राजपुरोहित रा 'सूरज', 'कपूत', 'कळंक', 'धाड़वी', 'दातार', देवदास रांकावत रा 'मुळकती मौत कळपती काया', 'धरती रौ सुरग', 'गांव! थारै नांव', 'होम करतां हाथ बळै', नवनीत पाण्डे रौ 'माटी जूण', 'दूजौ छैड़ौ', मधु आचार्य 'आशावादी' रा 'गवाड़', 'अवधूत' अर 'आडा-तिरछा लोग', रामेसर गोदारा रौ 'टूण्डौ मूण्डी' आद साम्हीं आवै। इक्कीसवैं सईकै में इण विधा माथै लगोलग काम हुय भी रैयौ है। आज इण विधा नैं परोटण री घणी दरकार है।

कहाणी राजस्थानी साहित्य रै नूंवै जुग री देन है। 'बात' परंपरा सूं अळगी हट नै राजस्थानी कहाणी आपरी नूंवी सरुआत करी। बीसवीं सदी सूं कहाणी विधा पेटै काम होवण लाग्यौ। नूंवा विसयां अर सिल्प नैं लेयनै कहाणीकार पाठकां साम्हीं पोथ्यां लाया। 1904 में आधुनिक राजस्थानी री पैली कहाणी कलकत्तै सूं निकळण वाळी हिंदी री मासिक पत्रिका 'वैश्योपकारक' में शिवचन्द्र भरतिया री 'विश्रांत प्रवासी' मानीजै। इणरै पछै गुलाबचन्द नागौरी री 'बडी तीज', 'बेटी की बिकरी' अर 'बहू की खरीदी', शिवनारायण तोसनीवाल री 'विद्यापरं दैवतम्', 'स्त्री शिक्षा को ओनामो', ब्रजलाल बियाणी री 'रामायण' अर भगवती प्रसाद दारूका री 'अेक मारवाड़ी की घटना' अर 'अेक मारवाड़ी की बात' छपी। अै कहाणियां उण बगत रै राजस्थानी समाज री सामाजिक बुरायां नैं उजागर करै, इण सारू आं में सुधारवादी सुर दिखै। अै कहाणीकार राजस्थानी समाज मांय रची-पची सामाजिक अबखायां कानी पाठकां रौ ध्यान खींचण री कोसिस करी। अै कहाणियां जूनी राजस्थानी बातां सूं घणी न्यारी ही। न तो इणां में कोई अलौकिक पात्र हा अर न ई कोई अलौकिक घटनावां। इणमें किणी भांत रा राजा-राणी या राजकंवर जैड़ा पात्र नीं हा, आं में फगत जथारथ नैं उजागर करीज्यौ हो। इण कारण कैय सकां कै आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरुआत प्रवासी राजस्थानी कहाणीकारां करी।

आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरुआत मुरलीधर व्यास वि. सं. 2012 (1955) में आपरै कहाणी-संग्रै 'बरसगांठ' सूं करी। आधुनिक राजस्थानी कहाणी परंपरा मांय दो धारावां देखी जाय सकै। अेक धारा तौ सुधारवादी सोच लियां दीखै तौ दूजी धारा मांय तत्कालीन सामाजिक जीवण मांय आवता बदळाव अर वां बदळावां रै कारण जीवण-मूल्यां माथै पड़तै प्रभाव नैं प्रकट करणै री कोसीस करीजी। राजस्थानी रा आधुनिक कहाणीकार भाव अर सिल्प दोनूं स्तर माथै कहाणियां नैं मांजण लाग्या। इणां मांय अन्नाराम सुदामा, मूलचन्द प्राणेश, बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोशी, नृसिंह राजपुरोहित, डॉ. मनोहर शर्मा, राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रौ नांव सिरै ओळ में आवै। आं कहाणियां में 'भूरी', 'कल्गि महातम' (बैजनाथ पंवार), 'बोल म्हारी मछली', 'उतर भीखा म्हारी बारी', 'भारत भाग्य विधाता' (नृसिंह राजपुरोहित), 'माटी री हांडी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'आंधै नैं आंख्यां' (अन्नाराम सुदामा) आवै। लोककथावां री सैली मांय राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विजयदान देथा, डॉ. मनोहर शर्मा, नानूराम संस्कर्ता आद रचनाकारां लोक संस्कृति अर लोकचेतना नैं लेयनै कहाणियां लिखी।

राजस्थानी कहाणी आपरी जात्रा मांय आज तांई केई पांवडा भरिया है। न्यारा-न्यारा विसयां नैं लेयनै कहाणीकारां आपरी कथा-कृतियां पाठकां साम्हीं राखी। इणां में नानूराम संस्कर्ता री 'ग्योही', नृसिंह राजपुरोहित री 'रातवासौ', 'अमर चूनड़ी', 'मऊ चाली माळवै', 'प्रभातियौ तारौ', 'अधूरा सुपना', मूलचन्द प्राणेश री 'उकळता आंतरा : सीळा सांस' अर 'चस्मदीठ गवाह', बैजनाथ पंवार री 'लाडेसर', 'नैणां खूट्यौ नीर', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कन्यादान', अन्नाराम सुदामा री 'आंधै नैं आंख्यां', श्रीलाल नथमल जोशी री 'परण्योड़ी कंवारी', 'मैंधी, कनीर अर गुलाब', सांवर दइया री 'असवाड़ै-पसवाड़ै', 'धरती कद तांई घूमैली', 'अेक दुनिया म्हारी', भंवरलाल 'भ्रमर' री 'तकादो', 'सातूं सुख', दामोदर प्रसाद शर्मा री 'प्रेतात्मा री पीड़', 'रामेश्वर दयाल श्रीमाळी री 'सळवटां', बी.अेल. माली अशांत री 'किली किली कटकौ', 'राई-राई रेत', मनोहर सिंह राठौड़ री 'रोसनी रा जीव', 'खिड़की', 'गढ रौ दरवाजौ', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र री 'समंद अर थार', मदन सैनी री 'फुरसत', 'भोळी बातां', मालचन्द तिवाड़ी री

'धड़ंद', 'सैलिब्रेसन', मीठेस निरमोही री 'अमावस, अेकम अर चांद', चैनसिंह परिहार री 'चरकास', रामस्वरूप किसान री 'हाडाखोड़ी', 'तीखी धार', 'बारीक बात', सत्यनारायण सोनी री 'घमसाण', 'धान कथावां', भरत ओळा री 'जीव री जात', 'सैक्टर नं. 5', 'भूत कथावां', डॉ. मदन केवलिया री 'काळी कांठळ', बुलाकी शर्मा री 'हिलोरो', 'साच नै आंच', कमल रंगा री 'सीप्यां अर मोती', रामेसर गोदारा री 'मुकनो मेघवाळ' अर 'वीरे तूं लाहौर वेखण आई', मनोज स्वामी री 'कियां' अर 'इमदाद', मधु आचार्य 'आशावादी' री 'ऊग्यौ चांद ढळ्यौ जद सूरज', 'आंख्यां मांय सुपना', डॉ. मदन गोपाल लढ़ा री 'च्यानण पख' अर राजेन्द्र जोशी री 'अगाड़ी' साम्हीं आयी। राजस्थानी कहाणी री इण जात्रा मांय लुगायां भी आपरी कलम सवाई करी है। आं महिला रचनाकारां मांय डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत री 'हियै रा हरफ', माधुरी मधु री 'केसरिया बालम', 'तिड़कण लाग्या बांस', कुसुम मेघवाळ री 'अमंगळी छाया', मंजू सारस्वत री 'उजास' आद कथाकृतियां रा नांव इण कहाणी-जात्रा मांय उल्लेखजोग है। आं रै टाळ सुखदा कच्छवाह, चांदकौर जोशी, पुष्पलता कश्यप, बसंती पंवार, रीना मेनारिया, अनुश्री राठौड़ आद ई मोकळी कहाणियां लिखनै राजस्थानी कथा-साहित्य रौ भंडार भरयौ है।

राजस्थानी गद्य विधावां में **निबंध** री महताऊ ठौड़ है। आधुनिक जुग में न्यारा-न्यारा विसयां माथै निबंध लिखीज्या है। निबंध विचार नैं, भावां नैं अर विसय नैं चोखी तरियां बांधण रौ काम करै। राजस्थानी मांय निबंधां रौ पैलड़ौ सरूप 'मारवाड़ी भास्कर' अर 'मारवाड़ी' जैड़ा पत्रां में प्रकासित होवण वाळा लेखां में देखण नै मिळै। ब्रजलाल बियाणी रा निबंध 'मोगराकली', 'गुलाबकली', बड़ी फजर रौ दीवौ आद ललित निबंध 'पंचराज' में प्रकासित होया। इण पछै तौ केई निबंध साम्हीं आवै। आगीवांण, ओळमों, जलमभोम, मरुवाणी आद पत्र-पत्रिकावां मांय निबंध प्रकासित होया। आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा चावा निबंध-संग्रहां मांय 'संस्कृति री सोरम' (डॉ. शक्तिदान कविया) 'राजस्थानी संस्कृति रा चित्राम', 'धर कोसां धर मजलां', 'अर्जुण आळी आंख' (जहूरखां मेहर), 'मणिमाळ' अर 'रस कळस' (डॉ. कल्याणसिंह शेखावत), 'भल लूआं बाजौ कित्ती' अर 'लोक रौ उजास' (डॉ. किरण नाहटा), 'पांवडा, पड़ाव अर मंजल', 'सोहम चमकत तारा' (बी.एल. माली 'अशांत'), 'बळिहारी उण देसड़ै' अर 'बुगचौ' (मूळदान देपावत), 'डीगा डूंगर धोळिया' अर 'परख सिरजण' (डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा), 'नाक री करामात' (बुद्धिप्रकाश पारीक), 'प्रीत रा पंछी' (अस्तअली खां मलकांण), 'अणभूत दीठ' (नरपतसिंह सिंघवी), 'सोनलिया ओळखांण' (माणक तिवाड़ी 'बंधु'), 'इतिहास रौ साच' (डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा), 'सुरनर तो कथता भला' अर 'सूरज कदै बिसूंजै कोनी' (सूर्यशंकर पारीक), 'इंदरधनख' (डॉ. चेतन स्वामी), 'सिरजण री साख' (डॉ. मदन सैनी), 'कवि, कविता अर घरआळी' (बुलाकी शर्मा), 'सुण अरजुण' (शंकरसिंह राजपुरोहित), 'मरुधर री मठोठ' अर 'जळ ऊंडा थळ ऊजळा' (गिरधरदान रतनू दासोड़ी), 'काव्यशास्त्र री ओळखाण' (गौरीशंकर प्रजापत) अर 'कीरत रा बखाण' (डॉ. नमामीशंकर आचार्य) आद खास है।

राजस्थानी मांय **नाट्य परंपरा** घणी जूनी है। लोकनाट्य रै स्हारै सूं मन-बिलमाऊ भणाई अर ग्यान बधावण रौ काम होवतौ। इण लोकनाट्य में ख्याल, स्वांग, रम्मत, रासलीला, फड़, टूंट्या आद लोकचावा है। आधुनिक राजस्थानी नाटकां री सरुआत शिववचन्द्र भरतिया सूं मानी जावै। वांरौ पैलौ नाटक 'केसर विलास' सन् 1900 में प्रकासित होयौ। इण परंपरा में दूजा नाटकां रौ लेखन अर प्रकासन अलग-अलग रचनाकारां द्वारा करीज्यौ।

जद बात आपां राजस्थानी नाटकां री विसय-वस्तु री करां तौ सरुआती नाटक सामाजिक धरातळ सूं जुड़िया लखावै। आं नाटकां मांय रचनाकार सामाजिक अबखायां नै सांम्ही लावण रौ जतन करियौ। 'केसर विलास' मांय बदळाव रा सुर दिखै। मारवाड़ी समाज री रीति-कुरीतियां रौ वरणाव इण नाटक में घणौ ई हुयौ है। भरतियाजी रा दूजा नाटक 'फाटका जंजाळ' अर 'बुढापै री सगाई' सांम्ही आवै। इण पछै भगवती प्रसाद दारूका रा 'बालविवाह', 'वृद्धविवाह', 'सीठणा सुधार', गुलाबचंद नागौरी रा 'मारवाड़ी मौसर' अर 'सगाई-जंजाळ', बालकृष्ण लाहोटी रौ 'कन्याबिक्री' अर नारायणदास सारड़ा रौ 'बाल ब्याव को फोर्स' आद नाटक सामाजिक अबखायां नैं लेयनै रचीज्या।

इणरै पछै केई नाटककार न्यारा-न्यारा विसयां नैं लेयनै नाटक लिख्या। श्रीनारायण अग्रवाळ रा 'कलियुगी कृष्ण रुकमणी नाटक', 'अकल बडी क भैंस', 'महाभारत को श्रीगणेश', 'विद्याउदय नाटक', सूर्यकरण पारीक रौ 'बोळावण', श्रीनाथ मोदी रौ 'गोमा जाट', गिरधारी लाल व्यास रौ 'प्रणवीर प्रताप', डॉ. नारायण विष्णु जोशी रौ 'जागीरदार', बालकृष्ण लाहोटी रौ 'कन्या बिकरी', मदनमोहन सिद्ध रौ 'जयपुर की ज्योणार', आज्ञाचंद्र भंडारी रौ 'पन्नाधाय', भरत व्यास रौ 'ढोला मरवण', 'रंगीलौ मारवाड़', यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' रौ 'तास रौ घर', बद्रीप्रसाद पंचोली रौ 'पाणी पैली पाळ', फूलचन्द्र रौ 'बिकाऊ टोरड़ौ', सत्येन जोशी रौ 'मुगती बंधण', अर्जुनदेव चारण रा 'दो नाटक आज रा', 'धरमजुद्ध', 'मुगती गाथा', 'जमलीला', 'जेठवा ऊजळी', 'बोल म्हारी मछली इत्तौ पांणी', 'सत्याग्रह', डॉ. ज्योतिपुंज रौ 'कंकू कबंध', लक्ष्मीनारायण रंगा रा 'बहूरूपियौ' अर 'पूर्णमिदम्' आद नाटकां रौ सिरजण होयौ।

नाट्यसास्त्र री चावी विधा है— **अेकांकी**। इणरौ चलन पैली पिछमी देसां में रैयौ, पछै भारत में भी आ विधा घणी चावी होयी। राजस्थानी री पैली अेकांकी शोभाचंद जम्मड़ री 'वृद्ध विवाह विदूषण' मानी जावै। नाटक मांय कथावस्तु मोटी होवै, पात्रां री संख्या बेसी होवै जदकै अेकांकी इण सूं छोटी होया करै। संस्कृत में इणनैं रूपक मान्यौ गयौ है। इणमें कथाक्रम, पात्रां री संख्या अर धेय सरूप मोटौ नीं होवै। अभिनेयता में भी बगत कमती ही लागै, इण कारण इणनै अेकांकी कैवै। श्रीनाथ मोदी री अेकांकी 'गांव सुधार या गोमा जाट' अर सूर्यकरण पारीक री 'बोळावण' सरुआती दौर री मानी जावै। इणरै पछै 'सामधरमा माजी' (लक्ष्मीकुमारी चूंडावत), 'देस रै वास्तै' (आज्ञाचंद भंडारी), 'जय जलमभोम (धनंजय वर्मा), 'डाक्टर रौ ब्याव' (डॉ. गोविन्दलाल माथुर), 'तोप रौ लाइसेंस' (दामोदर प्रसाद शर्मा), 'रगत अेक मिनख रौ' (सुरेन्द्र अंचल), 'मिनख' (हनुमान पारीक), 'छोरी फेल कियां हुई बैनजी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'कफन' (नागराज शर्मा) अर 'खाग्या बाळणजोगा' (जयंत निर्वाण) जैड़ी अेकांकियां मांय विसयां री विविधता देखण नै मिळै अर वांरै कारण अै आपरै पाठक रै हियै तांई पूगै।

साहित्यकार आपरी कलम सूं जद सबद चितराम उकेर नै आपरी भावनावां पाठकां साम्हीं परगटै, उणनैं **रेखाचितराम** केईजै। जिकौ काम अेक चितेरो आपरी तुलिका अर रंग रै स्सारै सूं करै वौ इज काम साहित्यकार आपरी कलम अर सबदां सूं करै। रेखाचितराम नैं अंग्रेजी में 'स्केच' कैयौ जावै। रचनाकाल विगत री दीठ सूं राजस्थानी में रेखाचितराम रचीजण री परंपरा सन् 1946-47 रै लगैटगै होयी। भंवरलाल नाहटा रौ 'लाभू काकौ' इण विधा री पैली रचना मानीजै। आजादी पछै इण विधा माथै सांतरौ काम होयौ है। इणरै पछै 'जूना जीवता चितराम' (मुरलीधर व्यास), 'सबड़का' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'बानगी' (भंवरलाल नाहटा), 'उणियारा', 'ओळखाण', 'मिनखां री माया' (शिवराज छंगाणी), 'अटारवां' (ब्रजनारायण पुरोहित), 'बारखड़ी' (वेद व्यास), 'यादां रा चितराम' (डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत), 'उणियारा ओळूं तणा' (अस्तअली खां मलकांण) आद रेखाचितरामां री फूठरी परंपरा साम्हीं आयी। ओळूं रै आधार माथै जद रचनाकार आपरी भावनावां अर विचारां नैं सहजता सूं पाठकां साम्हीं राखै, तौ उणनैं **संस्मरण** रौ नांव देईजै। संस्मरणां रौ आधार मिनख, घटना, जात्रा आद होय सकै। डॉ. नेमनारायण जोशी रौ 'ओळूं री अखियातां', डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ 'ओळूं री आरसी', मनोहर सिंह राठौड़ रौ 'यादां रौ झरोखौ', अन्नाराम सुदामा रौ 'आंगण सूं अर्नाकुलम' अर 'दूर दिसावर' जैड़ा संस्मरण सिरै है।

'रिपोर्ट' रौ विकसित रूप **रिपोर्ताज** साहित्यिक विधा रौ रूप लियौ। कम सूं कम सबदां मांय विवरौ मांडणौ रिपोर्ताज री सफळता मानीज्यौ है। राजस्थानी साहित्य मांय रिपोर्ताज विनोद सोमानी हंस रौ 'अेक दिन आपरौ', कुशलकरण रौ 'आवौ हथाई करां', रामनिवास रौ 'तीन बयान', पुरुषोत्तम छंगाणी रौ 'हाथ करींदौ दिल रौ दरियाव', माधव शर्मा रौ 'बजार पट्टै', 'चौड़ै जेब पट्टै', मुरलीधर शर्मा रौ 'नगर मगरै रौ', 'अजबघर मनड़ै रौ' आद आवै। इणां रै अलावा विनोद सोमानी 'हंस', कुशलकरण अर श्रीगोपाल ई कीं 'रिपोर्ताज' लिख्या है।

जीवनी अर **आतमकथा** रै खेतर मांय राजस्थानी रचनाकारां री कलम सुस्त रैयी। 'जीवनी' अर 'आतमकथा' जैड़ी रचनावां घणी कोनी आयी। 'आपणा बापूजी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'शिवचन्द्र भरतिया' (डॉ. किरण नाहटा), 'देस रा गौरव', 'भारत रा निरमाता' (दीनदयाल ओझा), 'महावीर री ओळखाण' (शान्ता भानावत), 'महापुरसां री जीवणियां' (गोविन्द लाल माथुर), 'भगवान महावीर' (डॉ. नृसिंह राजपुरोहित) जैड़ी रचनावां सांम्ही आयी है। मनोज कुमार स्वामी री आतमकथा 'खेचळ अर खेचळ' आतमकथा रै लेखै नूंवी पहल कैयी जाय सकै।

राजस्थानी मांय टाबरां सारू भी गद्य-साहित्य रौ सिरजण होयौ है। आज इण सारू घणौ ई काम होय रैयौ है। इण पेटै बात करां तौ राजस्थानी **बाल-साहित्य** री स्थिति ठीकठाक मान सकां। विजयदान देथा री 'बातां री फुलवाड़ी' (भाग-2) में टाबरां सारू पसु-पंखेरुवां री रोचक कथावां है। इणी भांत राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत री 'टाबरां री बातां', 'हुंकारौ दो सा', अन्नाराम सुदामा रौ बाल-उपन्यास 'गांव रौ गौरव', यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र, रौ बाल नाटक 'राजा सेखचिल्ली', करणीदान बारहठ री रचना 'झिंडियौ', बी. एल. माली 'अशांत' रा बाल उपन्यास 'बिलाणियौ दादौ' अर 'दूधिया दांत', मनोहर सिंह राठौड़ री कृति 'म्हारी पोथी', दीनदयाल शर्मा री कृति 'बाळपणै री बातां', 'संखेसर रा सींग', सुरेन्द्रसिंह शेखावत री बाल कथाकृति 'साची सीख', जयंत निर्वाण री बाल अेकांकी 'खाग्या बाळणजोगा', जेबा रशीद री 'मीठी बातां', डॉ. नीरज दइया री 'जादू रौ पेन', कृष्ण कुमार 'आशु' री 'माटी रौ मोल', शिवराज भारतीय री 'रंग रंगीलौ म्हारौ देस' अर 'मुरधर आई बिरखा राणी', हरीश बी. शर्मा रौ बाल नाटक 'सतोळियौ', मदन गोपाल लढ़ा री 'सपनै री सीख', दुलाराम सहारण री 'क्रिकेट रौ कोड', रामजीलाल घोड़ेला रौ 'जादू रौ चिराग', मनोज स्वामी री 'तातड़ै रा आंसू', कृष्ण कुमार बांदर री 'झगड़ बिलोवणौ खाटी छा', राजूराम बिजारणियां री 'कुचमादी टाबर' अर डॉ. गौरीशंकर कुलचन्द्र री बालकथा कृति 'पछतावौ' आद कृतियां राजस्थानी बाल-साहित्य नैं रातौ-मातौ करयौ है। इणरै अलावा केई पत्र-पत्रिकावां मांय इण पेटै सिरजण लगोलग हो रैयौ है।

राजस्थानी में **गद्यकाव्य** (गद्यगीत) ई लिखीज्या है। जिण काव्य रौ बारलौ सरूप तौ गद्य जैड़ौ होवै पण भावां में काव्य रौ रस आवै। इणमें आलंकारिक, चमत्कारी भासा रौ प्रयोग करीजै वौ गद्यगीत कहीजै। दरसन, अध्यात्म अर जीव-जगत रा विसयां नैं अंवेरतौ 'गद्य-काव्य' राजस्थानी में ई रातौ-मातौ होय रैयौ है। जूना कलात्मक गद्य री ओळ रा गद्य-गीत, जिणां में भावां री सबळता, संगीत री लय, वक्रोक्ति अर ध्वनि-संकेत (ध्वन्यात्मकता) जैड़ी विसेसतावां इणां में होवै। ठा. रामसिंघ तंवर, विद्याधर शास्त्री, मुरलीधर व्यास अर कुं. चन्द्रसिंह रा नांव गिणावण जोग है, जिकै गद्य-गीतां री रचना करी। राजस्थानी में कीं गद्य-काव्य संग्रह ई प्रकासित होया है, जिणां में डॉ. मनोहर शर्मा रौ 'सोनलभींग', कन्हैयालाल सेठिया रौ 'गळगचिया', गोविंद अग्रवाल रौ 'नुकती-दाणा' अर विक्रमसिंह चौहान रौ 'आतम दीठ' विसेस रूप सूं गिणाया जाय सकै।

राजस्थानी में भारतीय भासावां री रचनावां रौ **उल्थौ (अनुसिरजण)** ई मोकळौ होयौ है। सरुपोत में 'श्रीमद्भगवत गीता', उमर खैय्याम री 'रुबाइयां', कालिदास रै 'मेघदूत', रवीन्द्रनाथ टैगोर री 'गीतांजळी' अर वांरी दूजी पोथ्यां रौ ई राजस्थानी में उल्था करीज्या। भारतीय अर विदेसी भासावां री केई कृतियां रौ राजस्थानी में उल्थौ करण रौ जस चंद्रप्रकास देवल नैं जावै। वै फ्योदोर दोस्तोयेवस्की रै उपन्यास 'क्राइम एंड पनिशमेंट' अर सैम्युअल बैकेट रै नाटक 'वेटिंग फोर गोडो' रै अलावा आठ भारतीय भासावां रै पुरस्कृत कविता-संग्रहां रौ ई राजस्थानी में उल्थौ कर चुक्या है। इणां सूं पैलां राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, किशोर कल्पनाकांत, रावत सारस्वत, पारस अरोड़ा, पं. गिरधरलाल शर्मा, डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, पं. गिरधारीलाल व्यास, नृसिंह राजपुरोहित, डॉ. मनोहर शर्मा, डॉ. नारायणसिंह भाटी, डॉ. वेंकट शर्मा, डॉ. रामप्रसाद दाधीच, डॉ. मनोहर प्रभाकर, ओंकारश्री आद विद्वान लेखक राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां में केई महताऊ रचनावां रौ राजस्थानी उल्थौ करयौ। राजस्थानी उल्था रौ सै

सूं बेसी काम साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं होयौ है। साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत कृतियां रौ राजस्थानी उल्थौ करण वाळा में डॉ. सत्यनारायण स्वामी, रामनरेश सोनी, जेठमल मारू, अर्जुनसिंह शेखावत, उपेन्द्र अणु, मनोहरसिंह राठौड़, रामस्वरूप किसान, आईदानसिंह भाटी, श्याम महर्षि, डॉ. मदन सैनी, शंकरसिंह राजपुरोहित, कमल रंगा, कैलाश मंडेला, दुलाराम सहारण, डॉ. नीरज दइया, पूर्ण शर्मा 'पूरण', चेतन स्वामी, मालचंद तिवाड़ी, जितेन्द्र सोनी, रवि पुरोहित, संजय पुरोहित, डॉ. शारदा कृष्ण, मोनिका गौड़, डॉ. कृष्णा जाखड़, डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा आद रा नांव लिखण जोग है।

राजस्थानी गद्य रौ विगसाव बगत सारू होवतौ रैयौ है। इण बगत गद्य लेखन री परंपरा सांतरी रैयी है। जूनै साहित्य मांय बात अर ख्यात साहित्य मांय खूब लिखीज्यौ है। आजादी रै पछै राजस्थानी साहित्य लेखन में लगोलग इधकाई अर बधेपौ होवतौ रैयौ। जूना बगत सूं लेय'र आज लग नित नूंवा विसयगत, रूपगत बदळाव साथै विकसाव रै मारग बैवती साहित्य-जातरा बधती निजर आवै।

⌘⌘

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया राजस्थानी साहित्य रै वीरगाथा काल रौ बगत मानियौ—
   (अ) वि. सं. 835 सूं 1240 (ब) वि. सं. 1241 सूं 1584
   (स) वि. सं. 1585 सूं 1913 (द) वि. सं. 1614 सूं 1857
   ( )

2. 'कान्हड़दे प्रबंध' रा रचणहार कुण है?
   (अ) श्रीधर व्यास (ब) शिवदास गाडण
   (स) पदमनाभ (द) वीरभाण रतनू
   ( )

3. आं मांय सूं कुणसी कविता-पोथी ईसरदास बारठ री कोनी—
   (अ) नागदमण (ब) देवियांण
   (स) हाला-झाला रा कुंडळिया (द) हरिरस
   ( )

4. कवि मंछाराम छंद-सास्त्र रौ कुणसौ ग्रंथ लिख्यौ?
   (अ) कवि मत मंडण (ब) रघुवरजस प्रकास
   (स) छंदां री छौळ (द) रघुनाथ रूपक गीतां रौ
   ( )

5. फागु, धमाल, रासउ अर ढाळ किण सैली री रचनावां है?
   (अ) चारण सैली (ब) लौकिक सैली
   (स) जैन सैली (द) सामान्य गुणधर्मी सैली
   ( )

6. 'विरुद छिहत्तरी' अर 'किरतार बावनी' रा रचेता कुण है ?
   (अ) दुरसा आढा (ब) बांकीदास आसिया
   (स) रामनाथ कविया (द) पृथ्वीराज राठौड़
   ( )

7. आधुनिक काल रा सगळां सूं पैलड़ा कवि मानीजै—
   (अ) शंकरदान सामौर (ब) सूर्यमल्ल मीसण
   (स) ऊमरदान लाळस (द) नारायणसिंह भाटी
   ( )

8. आं मांय सूं कुणसी पोथी शिवचंद्र भरतिया री कोनी ?
   (अ) फाटका जंजाळ (ब) केसर विलास
   (स) कनक-सुंदर (द) चम्पा
   ( )

9. 'सांझ' कविता-पोथी रा कवि कुण है ?
   (अ) नारायणसिंह भाटी (ब) कन्हैयालाल सेठिया
   (स) सत्यप्रकाश जोशी (द) चन्द्रसिंह बिरकाळी
   ( )

10. 'धर कोसां धर मजलां' निबंध-संग्रै रा निबंधकार है—
   (अ) मूळदान देपावत (ब) डॉ. किरण नाहटा
   (स) जहूरखां मेहर (द) सूर्यशंकर पारीक
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा री उत्पत्त किसी अपभ्रंस सूं मानी जावै ?
2. राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रै कालक्रम नैं कित्तै भागां में बांटीज्यौ है ?
3. आदिकालीन जैन सैली री दो रचनावां अर वांरै रचनाकारां रा नांव लिखौ।
4. मध्यकाल रै अैतिहासिक गद्य री चार विधावां रा नांव लिखौ।
5. ईसरदास बारठ री दो भक्ति-भाव री रचनावां बतावौ।
6. सायांजी झूला री कृष्णभक्ति धारा री दो पोथ्यां कुणसी है ?
7. प्रगतिशील काव्यधारा रै तीन कवियां रा नांव बतावौ।
8. आधुनिक राजस्थानी साहित्य री पैलड़ी कहाणी अर उणरै रचनाकार रौ नांव लिखौ।
9. भगवती प्रसाद दारूका रै लिख्योड़ा नाटकां रा नांव बतावौ।
10. आधुनिक काल री च्यार गद्य विधावां रा नांव लिखौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी साहित्य रै वीरगाथा काल री विसेसतावां बतावौ।
2. वीरगाथा काल रै दो जैन कवियां अर वांरी रचनावां रा नांव लिखौ।

3. डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया राजस्थानी साहित्य रौ काल-विभाजण किण भांत कर्‍यौ है ?
4. राजस्थानी में प्रेमाख्यान परंपरा री रचनावां री ओळखाण करावौ।
5. भक्तिकाल री खास-खास रचनावां रा नांव लिखौ।
6. पृथ्वीराज राठौड़ विरचित 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' विसेसतावां बतावौ।
7. आधुनिक काल री प्रकृतिपरक रचनावां री ओळखाण करावौ।
8. राजस्थानी गद्य-काव्य री च्यार पोथ्यां अर वांरै रचनाकारां रा नांव लिखौ।
9. 'डांखळा' अर 'हाइकू' रौ परिचै करावौ।
10. रेखाचितराम अर संस्मरण में कांई फरक है ? बतावौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा री उत्पत्त अर विकसाव माथै अेक लेख लिखौ।
2. आदिकाल री खास रचनावां अर वांरै रचनाकारां रौ परिचै दिरावौ।
3. ''राजस्थानी साहित्य रौ मध्यकाल साचै अरथां में भक्तिकाल है।'' इण कथन नैं पुख्ता करण सारू आपरा विचार प्रगट करौ।
4. भक्तिकाल रै खास रचनाकारां रौ परिचै देवता थकां वांरी रचनावां री विसेसतावां बतावौ।
5. राजस्थानी रै आधुनिक साहित्य री कहाणी विधा माथै अेक आलेख लिखौ।
6. आधुनिक काल री प्रमुख विधावां माथै आपरा विचार प्रगट करौ।
7. राजस्थानी नाटकां री उत्पत्त अर विकसाव री विरोळ करौ।

❑काव्य-सास्त्र

काव्य री परिभासा, तत्त्व, भेद, प्रयोजन अर राजस्थानी छंद-अलंकार

पाठ परिचै

इण पाठ में काव्य री परिभासा, उणरै तत्त्वां, भेदां, प्रयोजनां रै सागै छंद अर अलंकार सास्त्र री चरचा करांला। इण चरचा सूं पैलां औ जाणणौ जरूरी है कै काव्य रौ अरथ कांई है? काव्य मांय दो पख रैवै— अेक तौ अनुभूति या भावपख अर दूजौ अभिव्यक्ति या कलापख। जदपि दोनूं पखां रौ आप-आपरौ महत्त्व है अर दोनूं ई अेक-दूजै सूं संबंधित है, फेरूं ई घणौ महत्त्व भावपख नैं ई दिरीजै। रस नैं काव्य री आतमा मानण वाळा आचार्य भावपख नैं अर कला-पख नैं थापन करण वाळा आचार्य अभिव्यक्ति नैं महत्त्व प्रदान करै। आपां रै अठै भावपख माथै कीं बेसी बळ दिरीज्यौ है। भारत अर पाश्चात्य विद्वानां कानी सूं काव्य नैं लेयनै करीजी परिभासावां सूं औ विसय औरूं स्पस्ट होवैला।

काव्य रा तत्त्वां रै मुजब पाश्चात्य देसां मांय कल्पना-तत्त्व नैं खास आसरौ मिळ्यौ है। इणरी वजै आ है कै पाश्चात्य समीक्षा-सास्त्र रा आदू आचार्य अरस्तू कला नैं अनुकरण मानी है, जदकै आपां रै अठै रा आदू आचार्य भरतमुनि रस अर भावां नैं ई प्रधानता दीवी है। सार री बात आ है कै भारतीय मनोवृत्ति कीं मांयली बेसी है अर पाश्चात्य में बारली माथै बेसी बळ है। इणरौ मतळब औ नीं है कै पाश्चात्य देसां मांय मांयलै पख री उपेक्षा है। दरअसल काव्य रौ मूळ तत्त्व तौ रागात्मक या भावात्मक ई है, पण उणरै साथै पाश्चात्य देसां मांय कल्पना-तत्त्व, बुद्धितत्त्व अर शैली-तत्त्व नैं ई मान्यौ गयौ है।

काव्य अर साहित्य में कांई फरक है— इण बात नै जाणणौ जरूरी है। 'साहित्य' सबद आपरै व्यापक अरथ में सारै वाङ्मय रौ द्योतक है। मतळब औ कै वाणी रौ जित्तौ ई प्रसार है, वौ सब साहित्य रै त्हैत है। इण अरथ में विग्यापन अर सूचना-पत्र तकात साहित्य मांय आय जावै। पण संकुचित अरथ में तौ साहित्य रौ काव्य सूं ई अभिप्रेत होवै— काव्य मांय गद्य अर पद्य दोनूं ई आवै। 'काव्य' सबद कविता रौ पर्याय नीं है, जिकी कै पद्य री बोधक है। उल्लेखजोग औ है कै पद्यबद्ध होवण सूं इज कोई रचना कविता या काव्य नीं बण जावै, पद्य तौ कविता रौ आकार मात्र कैईज सकै, उणरी आतमा तौ रस मांय ई होवै। इणी वास्तै आचार्य विश्वनाथ काव्य री परिभाषा दीवी— 'वाक्य रसात्मकं काव्यम्' यानी रसयुक्त वाक्य काव्य है। काव्य-सास्त्र रा आचार्यां काव्य रचण रा केई प्रयोजन ई बताया है, जिणां री विस्तार सूं चरचा इण पाठ में करीजी है।

इणी भांत छंद-सास्त्र री पारिभासिक रूप सूं न्यारी-न्यारी व्याख्या करीजी है। छंदां रौ जूनौ रूप सायद वेदां री रिचावां मांय अर लौकिक रूप में लोक री जुगां चावी विधा लोकगीतां में निजर आवै। लोकगीतां री भलांई सास्त्रीय परिभासा कोनी, पण लय, सुर, ताल, यति अर गति रै बिना अै गाईजै ई कोनी। काव्य-सास्त्र रै मुजब वरण, मात्रा, यति, गति, लय, सुर, तुकबंदी रौ विचार करनै जिकी सबद-रचना करी जावै उणनैं छंद कैवै। छंद तय करयोड़ा वरणां अर मात्रावां में रच्योड़ी अेक पद्य रचना है। इणरी व्युत्पत्ति संस्कृत रा छद् धातु सूं मानीजै। इणरौ अरथ आवृत्त करणौ, रक्षित अर राजी करणौ होवै। डिंगळ गीत छंद राजस्थानी छंद-सास्त्र री इधकाई है। इणरी मठोठ न्यारी-निकेवळी है अर इण रा केई भेद-उपभेद है। डिंगळ छंदां री छटा सूं छंद-सास्त्र घणौ सिमरध होयौ है।

राजसभावां में राजकवियां री विरुदावळी रा छंद, जुद्ध रा मैदान में वीरां री हूंस जगावण खातर वीरता रा छंद अर कीरत रा बखाण कै पछै जस-अपजस नैं उजागर करण वाळा छंदां सूं राजस्थानी काव्य भरयोड़ौ है। स्तुतिपरक

रचना ई छंद कहीजै। स्तुति आपरै इस्ट देवता री होवौ चायै आपरै आश्रयदातावां री, जिणमें उण रा विरद याद करीजै, छंदां री ओळी में आवै।

'राव जैतसी रौ छंद', 'रणमल्ल छंद', 'माताजी रा छंद', 'गोरखनाथजी रौ छंद', 'पाबूजी रौ छंद' आद रचनावां में नायक रै चरित्र रौ पुरजोर वरणाव होयौ है। 'पद्य' अर 'छंद' अेक अरथ में ई लिरीजै। छंद रौ अेक दूजौ अरथ बांधणौ (बंधन) ई होवै। छंदां रै नियमां में बंधनै कविता नैं ठैराव, वेग, राग अर फूठरापौ मिळै। नदी जिण भांत आपरै दोय किनारां में बंधियोड़ी वेग रै साथै तौ कदैई उतरती-चढती, मंथर गति सूं तय मारग माथै निरबंध बैवती समदर में रळ जावै, उणीज भांत छंद कविता में रम जावै।

काव्य री परिभासावां

काव्य री परिभासा अर अरथ सारू भारतीय अर पाश्चात्य विद्वानां आप-आपरा विचार प्रगट करया है। ऊपरी तौर सूं देखां तौ अै काव्य सारू अलग-अलग विचार लखावै, पण सगळा विचारां रौ मेळ इज काव्य रौ साचौ रूप है। काव्य रै रूप अर अरथ री विविध पखां सूं विरोळ इणरौ सखरौ रूप प्रगट करै। आं विद्वानां री आप-आपरै मतां मुजब काव्य री परिभासावां इण भांत है—

संस्कृति रै विद्वानां मुजब

''साहित्य रौ मतलब सबद अर अरथ रौ सहभाव होवै।''

—आचार्य भामह

''साहित्य उणनैं कैवै जिण मांय मंगळमयी अरथ री पदावली सामल होवै।''

—आचार्य दंडी

''जिण मांय सबद गुणालंकार सूं संस्कारित होवै अर फूठरापै रा बीज-तत्त्व सागै होवै।''

—आचार्य वामन

''जिण मांय रस होवै, वौ साहित्य है।''

—पं. विश्वनाथ

हिन्दी रा विद्वानां मुजब

''ग्यान-राशि रौ संचित कोश ई साहित्य है।''

—पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी

''साहित्य जीवण री आलोचना है.... उण मांय जीवण री व्याख्या अर आलोचना होवणी चाईजै।''

—मुंशी प्रेमचंद

आथूणा विद्वानां रै मुजब

''काव्य सूं मतलब वौ अनुकरणात्मक पद्य है जिणरौ मूळ काम शिक्षा अर आणंद देवणौ है।''

—सिडनी

''काव्य कल्पना अर भावां री भासा है।''

—हैजालिट

आं परिभासावां रै आधार माथै आपां कैय सकां हां कै साहित्य अर काव्य अेक सिक्कै रा इज दो पहलू है। मतलब कै दोनूं लगैटगै अेक इज है। जिण मांय सबद अर अरथ रौ सांतरौ मेळ, फूठरापौ, अलंकार, रस, ग्यान, आणंद, शिक्षा, जीवण री आलोचना अर कल्पना आद तत्त्वां रौ मेळ होवै, उणनैं काव्य मानीजै। औ काव्य मनोरंजन अर आणंद सागै ग्यान देवै।

काव्य रा तत्त्व

काव्य रा दो पख मानीजै— 1. भाव-पख अर 2. कला-पख। भाव-पख में अनुभूतियां आवै तौ कला-पख में अनुभूतियां नैं प्रगट करण वाळी भासा अर सैली आवै। दोनां री आप-आपरी महताऊ ठौड़ है।

आं दोनां में काव्य रा तत्त्वां रौ सांतरौ मेळ मिळै। मनोवैग्यानिकां मिनख रै मनोभावां नैं तीन भागां में बांट्या है— 1. भावना, 2. ग्यान अर 3. संकल्प।

पाश्चात्य विद्वानां काव्य री विरोळ करनै इण रा चार तत्त्व साम्हीं राख्या है— 1. भाव, 2. कल्पना, 3. बुद्धि (विचार) अर 4. सैली। आं री विगत इण भांत है।

1. **भाव-तत्त्व** : 'भावां बिना किसौ भव'। भाव, विभाव अर स्थायी भाव —अै भावां री दसावां है। आं सूं उवाचित होयनै इज काव्य में रस रौ चरम निगै आवै। भाव रौ मूळ रस है अर रस काव्य री आत्मा रै रूप में स्वीकारीजै।

2. **कल्पना-तत्त्व** : कल्पना री पांख बिना साहित्य रौ विस्तार अर ऊंची-गैरी उडाण कठै? कल्पना तत्त्व रै सायरै इज काव्य कूंकूं पगलिया करै।

3. **बुद्धि-तत्त्व** : भाव ग्यान बिना अडोळा। बिना ईंधन री गाडी। सगळै जगत, व्यवहार, सास्त्र अर काव्य रौ मूळ तत्त्व है— विचार (बुद्धि)। भावां रै विकार नैं साफ करण रौ काम बुद्धि-तत्त्व इज करै।

4. **सैली-तत्त्व** : भावां री घड़त अर बणगट सैली रै सायरै होवै। भावां नैं नूंवी, ऊजळी अर आकर्षक दीठ देवण रौ काम सैली तत्त्व करै। भाव अर सैली अेक दूजै रा पूरक है, जिका खीर-खांड ज्यूं मिळनै काव्य री मिठास नैं पुरसै।

काव्य रा भेद

काव्य रै भेदां बाबत चरचा करतां आ बात ध्यान में राखणी जरूरी है कै इण संबंध में भारतीय परंपरा अर पाश्चात्य परंपरा में फरक है। भारतीय परंपरा में काव्य रौ विभाजन केई आधारां माथै करीज्यौ है। पैलौ आधार इंद्रियां सूं संबंध राखै। जिकौ काव्य अभिनीत होयनै देख्यौ जावै, वौ 'दृश्य काव्य' है अर जिकौ कानां सूं सुण्यौ जावै, वौ 'श्रव्य काव्य' बाजै जदपि वौ पढियौ ई जावै।

दृश्य काव्य

दृश्य काव्य रौ आणंद जनसाधारण ई लेय सकै, इण वास्तै इणनैं 'पांचवौं वेद' कैयौ गयौ है। दृश्य काव्य में देखण वाळै नैं कल्पना माथै घणौ जोर नीं देवणौ पड़ै। उण मांय भूत ई वरतमान री दांई घटित होवता दिखाई देवै। इणमें जठै देखणियां री कल्पना माथै कम जोर पड़ै, बठै ई रचणहार री कल्पना माथै बेसी भार रैवै, क्यूंकै उणनैं प्रस्तुति री सारी बातां रौ ध्यान राखणौ पड़ै।

श्रव्य काव्य

श्रव्य काव्य पठित समाज सारू होवै। इणमें पढणिया अर सुणणिया रौ सीधौ संबंध रैवै। इणमें सबद इज मानसिक चितराम उपस्थित करै, सो इणमें ग्राहक कल्पना रौ बेसी काम पड़ै। इण काव्य में वरणन अर प्राक्कथन री प्रधानता रैवै। बियां कथोपकथन ई रैवै, पण अलबत कम।

दृश्य काव्य रा भेद

आकार रै आधार माथै दृश्य काव्य रा नाटक, रूपक, नाटिका, भाण, प्रहसन आद 10 भेद करीज्या है। इणां री विस्तार सूं जाणकारी आचार्य राजशेखर रै 'दशरूपक' नांव रै ग्रंथ में दिरीजी है।

श्रव्य काव्य रा भेद

श्रव्य काव्य तीन तरै रा होवै— 1. पद्य, 2. गद्य, अर 3. चंपू।

पद्य श्रव्य काव्य मांय संगीत अर छंद री प्रधानता रैवै। बियां आजकाल पद्य में नियम अर नाप-तोल रौ उत्तौ मान नीं रैयौ, जित्तौ सुणण री सुखदता रौ। सो आजकाल छंद विहूण पद्य रौ ज्यादा चलण है। पद्य मांय गद्य री तुलना में भाव रौ प्राधान्य रैवै। बंध रै आधार माथै 'मुक्तक' अर 'प्रबंध' दो विभाग पद्य रा करीजै।

मुक्तक काव्य रा छंद अपणै आप में पूरा हुवै, वै अेक दूजै सूं संबंध नीं राखै। सो मुक्तक में अेक-अेक छंद री साज-संवार माथै बेसी ध्यान दिरीजै। मुक्तक काव्य रा आकार री दीठ सूं दो भेद हुवै— अेक पाठ्य अर दूजौ गेय, जिणनैं 'प्रगीत' ई कैयौ जावै। गेय मांय पाठ्य री तुलना में वैयक्तिकता, भावात्मकता अर आत्मनिवेदन रो पख बेसी रैवै।

प्रबंध काव्य में तारतम्य होवै अर पूर्वापर संबंध रैवै। इणमें वरणन, प्राक्कथन, पारस्परिक संबंध अर सामूहिक प्रभाव री प्रधानता रैवै। जीवण री अनेकरूपता अर अेकपक्षता रै आधार माथै प्रबंध काव्य रा दो भेद करीजिया है— 1. महाकाव्य, अर 2. खंडकाव्य। महाकाव्य मांय अेक तै आकार रै अलावा विसय री महानता अर उदात्तता रैवै। महाकाव्य सारू कीं नियम ई होवै जिणां रै पाळन सूं 'महाकाव्य' बाजै। आकार में वौ आठ सरगां सूं कम नीं होवणौ चाईजै।

खंड काव्य में जीवण रै अेक ई पहलू या अेक ई घटना नैं महत्त्व दियौ जावै।

गद्य

गद्य विविध रूपां में लिख्यौ जावै, सो इणरा अनेक भेद है। गद्य री बियां अठै प्राचीन परंपरा रैयी है, पण पाश्चात्य परंपरा रै कारण केई नूंवा रूप अंगेजिया है। गद्य रा अै विभिन्न रूप विसय, आकार, सैली इत्याद रै कारण साम्हीं आया है, जिका विधावां रै रूप में जाणीजै। आज गद्य री केई विधावां प्रचलित है, जिंया कै उपन्यास, कहाणी, निबंध, व्यंग्य, लेख, आलेख, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आतमकथा, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र इत्याद।

इण भांत काव्य यानी कै साहित्य मानव समाज सूं अभिन्न जुड़्यौ थकौ है अर आपरै विविध रूपां सूं मानव नैं संतोष-संबळ देय रैयौ है।

काव्य रा प्रयोजन

काव्य री रचना क्यूं करीजै? आखिर काव्य री रचना रै लारै प्रयोजन कांई है? साहित्य रा आचार्यां काव्य रा भिन्न-भिन्न प्रयोजन मानै। आचार्य मम्मट आपरै ग्रंथ 'काव्यप्रकाश' मांय विस्तार सूं साहित्य रा प्रयोजन बताया है— ''काव्य जस सारू, धन सारू, वैवार जाणण सारू, अनिस्ट रै निवारण सारू, आणंद सारू अर उपदेस सारू होवै।'' इणां में सूं जस, धन अर अनिस्ट निवारण कवि सारू प्रयोजन होवै अर बाकी रा प्रयोजन पाठकां सारू होवै।

जस सारू : जस या कीरत मिनखमात्र री कमजोरी होया करै। बियां जस अेक प्रधान प्रेरक सगती होवै अर कवि ई काव्य-रचना अमूमन जस सारू ई करिया करै।

धन सारू : काव्य रै भौतिक प्रलोभनां में सैं सूं बेसी धन है। साहित्य रै इतिहास माथै निजर न्हाखां तौ असंख्य अैड़ा उदाहरण मिळ जावैला, जिका दरसावै कै काव्य रै कारण कवियां नैं धन हासल होयौ। बियां सगळा ई कवि धन रै लोभ सूं प्रेरित नीं होवै।

वैवार जाणण सारू : काव्य सूं लोक-वैवार रौ ग्यान पाठकां नैं तौ होवै इज है, पण रचणहार नैं ई होवै क्यूंकै लिखण सूं पैलां वौ आपरै ग्यान नैं पक्कौ कर लेवै। जियां कै किणी प्राचीन काव्य सूं उण बगत रै रीत-वैवारां रौ ग्यान होवै।

अनिस्ट निवारण सारू : अनिस्ट निवारण सारू ई काव्य री रचना करीजै, ज्यूं कै आपरै 'बाहु' (भुजा) री पीड़ा रै निवारण सारू गोस्वामी तुलसीदास 'हनुमान बाहुक' काव्य री रचना करी। आजकाल समाज अर देस रै कस्ट-निवारण सारू ई काव्य रचनावां करीजै।

आणंद सारू : काव्य रौ मूळ ध्येय आणंद इज है। काव्य रै आस्वादन सूं जिकौ रस-रूप अर आणंद मिळै, वौ छानौ नीं है। हालांकै औ पाठकां रौ लक्ष्य है क्यूंकै इणसूं उणां नैं आणंद मिळै, फेरूं ई इण मांय वौ अंतस रौ सुख ई सामल है जिण सूं प्रेरित होयनै कवि काव्य रौ सिरजण करै।

उपदेस सारू : काव्य मांय उपदेस होवणौ चाईजै या नीं, इण संबंध में वाद-विवाद होवता रैया है। उपदेस सारू तौ धरम-ग्रंथ होया करै, पछै काव्य मांय उपदेस क्यूं? पण काव्य रै माध्यम सूं जिकौ उपदेस दिरीजै, वौ व्यंजना-प्रधान होयां सूं सरस होया करै। काव्य रौ रस उपदेस रूपी कड़वी औखद नैं ई ग्रहण करण जोग बणाय देवै। जियां बिहारीलाल रै उपदेसपरक अेक दूहै सूं महाराजा जयसिंह माथै जादू रौ-सो असर होयौ। दूहौ इण भांत है—

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यो, आगै कौन हवाल।।

आपरै सुख सारू : गोस्वामी तुलसीदास आपरै काव्य 'रामचरितमानस' नैं 'स्वांत: सुखाय' कैयौ है। इणमें कोई संदेह नीं कै सत्काव्य 'स्वांत: सुखाय' ई लिखियौ जावै, पण इणरौ मतळब औ नीं है कै वौ सुणणियां या पढणियां सारू नीं व्है। काव्य नैं कैवण अर सुणण में सुख मिळै, पण आत्माभिव्यक्ति रौ सुख अभिव्यक्त कर देवण मात्र सूं खतम नीं होय जावै।

राजस्थानी छंद

छंदां रौ मैतव

छंदां रै मांय थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता है। गूढ अर गैरौ अरथ समझावण री खेचळ अै करै। संगीतात्मकता रौ गुण होवण रै कारण सुणण में आछा पण लागै। गेयता रै कारण वातावरण नैं सरस बणावै। आं छंदां रै मिठास में मानखौ घड़ी भर आपरा दुखड़ा भूलनै सुख री घड़ियां चितारै। केई छंद हियै रा कंवळा, मीठा, निरमळ भावां नैं उजागर करण वास्तै बरतीजै। माधुर्य अर प्रसाद गुणां सूं लबालब होयोड़ा आं छंदां री मानखै नैं घणी दरकार आज ई है। क्यूंकै इण आर्थिक अर भौतिक जुग रौ मिनख सांति चावै। इण अपरोगी दुनिया में अपणायत चावै। अेकलौ बैठौ मिनख रेड़ियै, टेपरिकार्डर सूं अैड़ा छंदां नैं सुण'र जीवण री नीरस घड़ियां नैं सरस बणाय सकै।

ओज गुणवाळा वीर छंदां नैं सुणां तौ आज ई उणियारै माथै वीर-भावां रा सैलाण देख्यां बिना नीं रैवां। छंदां में वा ताकत है, बूतौ है कै जिण रस रौ छंद बोलीजै या पढीजै, उठै उणीज तरै रै भावां रौ वातावरण बण जावै। राग-रागनियां रौ आं छंदां सूं गैरौ जुड़ाव है। सोरठ, मांड, मल्हार, राग रा छंद आपरै हेताळू रै हियै में हेत जगावण वाळा है। आं छंदां री महिमा बखाण करां जित्ती ई थोड़ी है।

छंदां रा भेद

छंदां रा केई भेद-उपभेद मानीजै, पण मोटै रूप सूं छंद दोय तरै रा होवै—

1. मात्रिक छंद अर 2. वरणिक छंद।

1. मात्रिक छंद

जिण छंद में मात्रावां री गिणती कर छंद बणाईजै, वौ मात्रिक छंद मानीजै। मात्रावां री गिणती सूं छंदां री ओळ्यां में यति, गति अर लय नैं परोटतां जिकी रचना करीजै, वौ मात्रिक छंद मानीजै। दूहौ, चोपाई, रोला, उल्लाला, छप्पय, गीत, हरिगीतिका आद मात्रिक छंदां रा उदाहरण है।

2. वरणिक छंद

जिणमें वरणां री गिणती रै मुजब यति, गति बरतीजै अर मात्रावां रै आधार माथै काव्य-रचना रौ सिरजण करीजै, उणनैं वरणिक छंद कैवै। भुजंगी, भुजंगप्रयात, त्रोटक, सवैया, कवित्त आद वरणिक छंदां रा उदाहरण है।

आं दोनूं तरै रा छंदां में ई वांरै चरणां री मात्रावां अर वरणां री गिणती मुजब तीन भेद बखाणीज्या है—

1. *सम छंद* : जिणमें छंदां रै चरणां में मात्रावां या वरणां री गिणती बराबर होवै। अेक समान मात्रावां या वरणां री गिणती वाळा छंदां नैं सम छंद कैवै। चौपाई सम छंद है।

2. *विसम छंद* : जिणमें छंदां रै चरणां री मात्रा या वरण न्यारा-न्यारा होवै, अेक समान नीं होवै, वौ विसम छंद है। छप्पय, कुंडळिया विसम छंद है।

3. *अरधसम छंद* : आं छंदां में पैला अर तीजा, दूजा अर चौथा चरणां री मात्रावां या वरणां में समानता होवै। दूहौ अरधसम मात्रिक छंद रौ चावौ उदाहरण है। आं रै टाळ केई गणबद्ध छंद (भगण, मगण), मुक्तक छंद, साधारण छंद, दंडक छंद रै रूप में ई ओळखीजै। जद छंदां री गैराई सूं व्याख्या करां तौ अै रूप ई साम्हीं आवै, पण मूळ में छंदां रा दोय भेद है, वै है मात्रिक छंद अर वरणिक छंद।

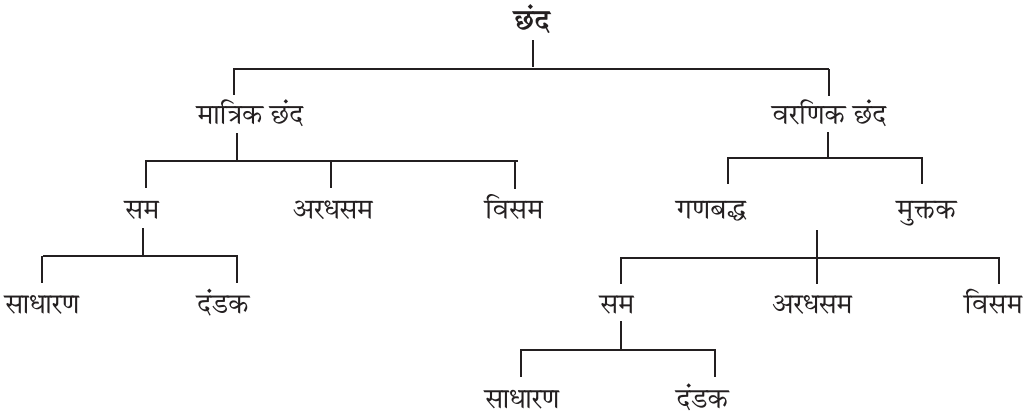

राजस्थानी साहित्य में गीत-छंदां री आपरी न्यारी बानगी देखण नै मिळै। छंद-सास्त्र रा ग्रंथां में गीतां री न्यारी-न्यारी गिणती रा दाखला मिळै। 'रघुनाथ रूपक' में 72 भांत रा गीतां रौ वरणाव मिळै। 'कवि कुळबोध में' 84 अर 'रघुवरजस प्रकास' में 91 गीत-छंदां रा दाखला दियोड़ा है। पाठ्यक्रम सारू तय करयोड़ा कीं छंदां री परिभासा अठै दाखलै समेत दिरीजी है—

1. वेलियो सांणोर

डिंगळ-काव्य में बरतीजण वाळा घणकरा मात्रिक छंदां में 'सांणोर' रा केई भेद अर उपभेद है। छोटा सांणोर रा चार भेदां में वेलियो गीत अेक है। रघुनाथ रूपककार इण रा लक्षण इण भांत बताया है—

चार भेद तिण रा चवै, कवियण बड़ ओकूब।
समझ वेलियो, सोहणो, पुड़द जांगड़ो खूब।।

इणरै सरूप री व्याख्यां इयूं करै—

सोळै कळा विषम पद साजै। सम पद पनरै कळा समाजै।।
धुर अठार मोहरा गुरु लघुधर। कहजै 'मंछ' वेलियो इमकर।।

वेलियो छंद रै विसम पदां में 16 अर सम पदां में 15 मात्रावां व्है। औ तौ छंद रौ सामान्य गुण है। पण कठैई-कठैई इणरै पैलै चरण (पैला द्वाळा में) 18 मात्रावां ई बरतीजै। तुकांत में गुरु-लघु (ऽ।) व्है। पिंगळ-सास्त्र में इणनैं अरधसम मात्रिक छंद कैवै। बीकानेर महाराजा पृथ्वीराज राठौड़ रचित 'वेलि क्रिसन-रुकमणी री' रचना वेलियो छंद में करीजी है। वेलियो छंद रा दाखला—

सरसती कंठि श्री गृहि मुखि सोभा,
भावी मुगति तिकरि भुगति।
उवरि ग्यान हरि भगति आतमा,
जपै वेलि त्यां पै जुगति।।
('वेलि क्रिसन-रुकमणी सूं)

दिल अंतर अेह विचार री दसरथ,
धर पदवी जुवराज सधीर।
सो दैणी विसवा ही वीसै,
राज जोग दीसे रघुवीर।।
('रघुनाथ रूपक' सूं)

गीत छंद त्रबंकड़ो

राजस्थानी रौ औ चावौ छंद है। इणरै विसम चरणां में 16-16 मात्रावां व्है अर दूजा नै चौथा री तुक मिळै। अै त्रबंकड़ो गीत रा लक्षण है। कवि कैवै कै छोटा सांणोर रै ज्यूं विसम पद राख नै (जिणमें 16 मात्रावां होवै) दूजा अर चौथा री तुक मिलावौ। रघुनाथ रूपक में कवि मंछा राम इण भांत वरणाव करै—

चरण विसम सांणोर लघुचा, दुवै चतुर पद मोहरा दाखो।
कहै मंछ कर गीत त्रबंकड़ो, भला जिकण में प्रभु गुण भाखो।।

इण गीत नैं घोड़ादमो ई कैवै। त्रबंकड़ो गीत-छंद रा दाखला इण भांत है—

अंगद मेलियो सद दूत अपंपर, वळ अकलां मजबूत वडाळो।
वप सिणगार धूत खळ बैठो, रचे सभा अदभूत रढाळो।।
मुणै जाय हरि मेले मोनूं, जड! तोनूं आगूंच जतावूं।
सीस नमाय सिया ले साथै, वचसी जदां उपाव बतावूं।।

××

मुगट उतार सुघट दसमुख रा, लेकर उघट धुजाई लंका।
बाल सुतण्ण रचियो विग्रह, आयो राघव कनै असंका।।

कुंडळियो छंद

औ मात्रिक छंद है। औ पैली अेक दूहै अर पछै 24-24 मात्रावां रा चार चरणां में पूरौ व्है, जिका रोळा छंद व्है। औ दूहा अर रोळा छंद रा मेळ सूं बणै। चौथा अर पांचवां पद में सिंहावलोकन व्है। पैला पद रा सरुआती वाळा सबद अंत में ई आवै। रघुनाथ रूपककार कुंडळिया छंद रा लक्षण नीं लिख्या, पण ग्रंथ में जिका कुंडळिया आया, उणां रा लक्षण लिख्या है। उणां झड़उलट, राजवट, सुद्ध अर दोहाळ कुंडळिया रा दाखला देवता थकां इण रा चार रूप बताया है। अठै फगत सुद्ध कुंडळिया रा लक्षण अर दाखलै री बानगी दी जावै—

जीव उधारे जगत रा, किता सुधारै काम।
भार उतारै भूम रो, धणी पधारै धाम।।

धणी पधारै धाम, सुजस खाटे जग सारे।
राज कियो बड रीत, गिणे व्रष सैंस इग्यारे।।
रह्या जित रघुराव, धरम मरजादा धारे।
आप पधारत ओक, अवधपुर जीव उधारे।।
(रघुनाथ रूपक सूं)

किसना आढा कृत 'रघुवरजस प्रकास' में कुंडळिया री व्याख्या इण भांत है—

पहलां दूहो एक पुण, आद अंत तुल जेण।
पलटै धुर पूठा कवित, तव कुंडळियो तेण।।

कुंडळिया रौ दाखलौ—

जपै रसण रघुवर जिकै, अधत्यां कपै अमांण।
जनम मरण सुधरै जिका, जे बडभागी जांण।।
जे बडभागी जांण, लाभ तन पायां लीधौ।
त्यां जिग किया तमाम, कांम सुकृत ज्यां कीधौ।।
वां व्रत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रां हथ।
ज्यां सधिया अठ जोग, त्यां किया कौटक तीरथ।।
धन मात-पिता जिण वसधर, कळुख तिकां दरसण कटै।
कवि किसन कहै धन नर तिकै, रसण रघुवर जपै।।
(रघुवरजस प्रकास सूं)

छप्पय छंद

औ अेक विसम मात्रिक छंद है। रोळा अर उल्लाळा रै मेळ सूं छप्पय बणै। उल्लाळा में कठैई 26 तौ कठैई 28 मात्रावां होवै। छप्पय में आं दोनूं छंदां रौ मेळ होवण रै कारण अठै रोळा अर उल्लाळा रै गुणां बाबत व्याख्या देवणी ठीक रैसी। इणां री सरल परिभासा इण भांत है—

रोळा : औ मात्रिक सम छंद है। इण रा चार चरण होवै अर हरेक में 24-24 मात्रावां होवै। 11 अर 13 माथै यति लागै। रघुनाथ रूपक रै परिशिष्ट में रोळा छंद री व्याख्यां इयूं करीजी है—

रोळा छंद सु नाम नागपति पिंगळ राख्यो।
तुक तुक माहे चतुर कळा चवु विंसति भाख्यो।।
हिक दस पर विस्राम, सरब जण चिंता हरणूं।
भणूं सदा इम सकळ, विमळ कवि कंठाभरणूं।।

उल्लाळा : इण रा विसम चरणां में 15 अर सम चरणां में 13 मात्रावां व्है। इण भांत औ 28 मात्रावां रौ छंद है। किसना आढा उल्लाळा छंद रा पांच भेद बताया है— 1. रस उल्लाळा 2. स्याम उल्लाळा, 3. छप्पय उल्लाळा, 4. वरंग उल्लाळा अर 5. कांम उल्लाळा—

रस उल्लाळा तिथ तेर मत। छवीस सम पद स्यांम।
स्यांमक रस दूहा सहित। मुणतै छप्पय नांम।।
उलटो रस उल्लाळ उण। आख वरंग उल्लाळ।
दाख त्रिदस फिर पंचदस। तुक बिहुंवै पड़ताळ।।

अरथात 15 अर 13 मात्रावां वाळौ रस उल्लाळा, 13-13 मात्रावां वाळौ स्यांम उल्लाळा, 13-11 मात्रावां वाळौ छप्पय उल्लाळा, 13-15 मात्रावां वाळौ वरंग उल्लाळा अर 15-15 मात्रावां वाळौ कांम उल्लाळा कहीजै।

रघुनाथ रूपककार आपरा ग्रंथ में उल्लाळा री व्याख्या इण भांत करै—

उल्लाळा छंद बसु दोय, कळ विरति पंच दस ऊपरा।
धर दोय दोय इक तीन, दुव दोय एक दुव धूपरा।।
कळ तेरह दोहा सम सदा, खट दो-दो इक दोय कर।
ओ नियम छोड़ पिंगळ कहै, आखर पण अेक न उचर।।

रघुनाथ रूपक रै परिशिष्ट में छप्पय री व्याख्या इण भांत करीजी है—

काव्य छंद सारो कह'र, अंत उलाळो आध।
छप्पय नामक छंद जो, गिण प्रस्तार अगाध।।
कोई कोई भाखा कवि करै, रोळा पर उल्लाळ।
तिणनूं पण छप्पय तवै, चंडालिनि आ चाल।।

इण भांत रोळा अर उल्लाळा रै मेळ सूं बणण वाळौ छप्पय छंद बाजै, जिकौ विसम मात्रिक छंद है। इणमें चार पद रोळा अर आखिरी दोय पद उल्लाळा रा होवै। औ अेक दंडक छंद ई है। छप्पय छंद रौ औ दाखलौ, जिणमें हनुमानजी, सरस्वती अर गुरु री वंदना करीजी है—

बंदवीर बजरंग कीसबर मंगळकारी।
समर मात सरसती विमल कविता विसतारी।
सद्गुण प्रणम किसोर सचिव अमरेस सवाई।
करे पिता जिमि कृपा तिकण गुण समझ बताई।
मो मत प्रमांण कवि मंछ कह, सुकवि बांण ग्रंथांण सुण।
रस गाथ गीत पिंगळ रचे, गहर कहूं रघुनाथ गुण।।

अलंकार

संस्कृत साहित्य में अलंकार सबद री व्युत्पत्ति अर काव्य में इणरै प्रयोग माथै विचार करीज्यौ, उणीज भांत राजस्थानी में ई अलंकारां रा प्रयोग नैं अंगेजियौ। अलंकार संप्रदाय रा प्रवर्तक भामह काव्य रा फूठरापा वास्तै अलंकारां रा प्रयोग नैं मानै। इणीज भांत संस्कृत रा दूजा विद्वान ज्यूं कै आचार्य वामन, रुद्रट, मम्मट, दण्डी अर उद्भट ई काव्य में अलंकारां रा महताऊपणा नैं बतावै। काव्य री सोभा बधावण वाळा गुण धरम नैं साहित्य में अलंकार कहीजै। जिण भांत गैंणा-गांठां पैरयोड़ी लुगाई फूठरी लागै, उणरौ रूप सवायौ होवै, उणीज भांत काव्य में सोनै जैड़ा आखरां सूं कविता री बानगी ई रूपाळी लागै, उणमें अेक चमत्कार अर आकर्षण आय जावै। काव्य में अलंकारा रौ प्रयोग करण खातर भासा-विज्ञान रा विद्वानां सबद, ध्वनि, रस अर वरणां रै रूपाळै मेळ सूं काव्य नैं संवारण री जुगत करै। जिण भांत गैणां-गांठा अर पैरवास सूं सामाजिक स्तर अर जातिगत छाप निजर आवै, उणीज भांत काव्य-सास्त्र रा आचार्यां रै विचार में ई काव्य रा अलंकारां री न्यारी-न्यारी परिभासावां दिरीजी है। काव्य में अलंकारां रै प्रयोग बाबत कवि री भूमिका महताऊ होवै। अलंकारां सूं आपरै विचारां, भावां नैं छंद रूपी रीत में ढाळतौ कवि सिरजण नैं कल्पना सूं नूंवौ सरूप देय सकै। भावां नैं किण ढाळै राख सकै, उण असरदार भावां री खिमता अलंकारां सूं आवै। भावां री गैराई, कोरणी सूं परोट्योड़ी झीणी भाव तरंगां, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, प्रतीकां अर नूंवा बिम्बां री जड़ाऊ घड़त सूं कविता नैं सिणगारीजै अर औ काव्य पाठकां नैं घणौ रळियावणौ अर असरदार लागै। राजस्थानी रा रीति ग्रंथां में 'पिंगळ सिरोमणि' में अलंकारां रौ वरणन करीज्यौ है। इणरै टाळ दूजा ग्रंथां में या कोई रचना या काव्य-विसेस रै ओळावै ई अलंकार परंपरा री चरचा नीं रै बरोबर करीजी है।

राजस्थानी रौ निकेवळौ अलंकार 'वैण सगाई' काव्य री सोभा बधावै, लारला सगळा *अरथालंकार* अर *सबदालंकार* संस्कृत साहित्य वाळा ई राजस्थानी में परोटीजै। काव्य में अरथ सूं फूठरापौ अर चमत्कार दीखै तौ अरथालंकार, ज्यूं— उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रांतिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति व्याजस्तुति कहीजै।

जिण काव्य में सबदां नैं सजोरै रूप सूं, सरस या अनोखा रूप सूं परोटण में काव्य-चमत्कार प्रगटीजै तौ उठै सबदालंकार मानीजै। वैण सगाई, अनुप्रास अर उणरा भेद, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति आद सबदालंकारां री पांत में आवै। अठै कीं अलंकारां री परिभासा अर दाखला दिया जावै—

अनुप्रास अलंकार

'काव्यालंकार' में आचार्य भामट्ट लिखै कै अेक रूप रा वरणां रौ विन्यास ई अनुप्रास है। आचार्य उद्भट अर दूजा विद्वान अेक जैड़ी उक्ति होवण अर सबदां री नैड़ी-नैड़ी आवृत्ति (अेक सबद रैय-रैयनै या दो बार या दो सूं घणी बार उणीज काव्य में परोटीजै) नैं अनुप्रास कैवै। अनुप्रास रा केई भेद अर उपभेद करीजै—

छेकानुप्रास

इणमें वरण या वरण-समूह दोय बार बरतीजै। इणरौ औ दाखलौ 'हरिरस' सूं लिरीज्यौ है—

महागज ग्राह छुडावण मंत। सनातन पाळक केवळ संत।
मुकंद! तूं आय वसै जिअ मुक्ख। संसार समुद्र तरै वह सुक्ख।

वरणां री आवृत्ति दोय बार होवण सूं औ छेकानुप्रास है। अठै वैण सगाई भी है। वैण सगाई में ई अनुप्रास ज्यूं वरणां रौ मेळ देखीजै।

वृत्त्यानुप्रास

काव्य में कोई वरण या वरण-समूह तीन या उणसूं घणी बार बरतीजै उठै वृत्त्यानुप्रास होवै। दाखला सरूप—

(1)

चारिय वांणिय खांणिय चार। वदै जग जीव विचार विचार।।
लहै नहीं पार कहूं लवलेस। आदेस आदेस आदेस आदेस।।

(2)

नमो ओम रूप नमो ओंकार। नमो अजरामर सेस अधार।
नमो अवतार सकाज अधीस। नमो जगताज नमो जगदीस।।

पैला दाखला में ऊपरली दोय ओळ्यां में छेकानुप्रास अर नीचै वृत्त्यानुप्रास रौ रूपाळौ वरणाव होयौ है।

श्रुत्यानुप्रास

अठै उच्चारण ठौड़ रौ महत्त्व है। अेक ठौड़ सूं उच्चारित वरणां री आवृत्ति होवण नै श्रुत्यानुप्रास कैवै—

नमो वर सीत त्रिभूवण वंद। नमो मधु कीटभ जीत मुकंद।।
नमो विध लाधण मेटण व्याध। सराप भसम्म उतारण साध।।

इण पद में ऊपरली ओळी छेकानुप्रास है। पूरा पद में 'नमो' री आवृत्ति वृत्त्यानुप्रास अर अेक ई उच्चारण ठौड़ वाळा केई वरणां री आवृत्ति होवण सूं श्रुत्यानुप्रास है। अै सगळा वरण अंतस्थ-अल्पप्राण है जिणां रै उच्चारण सूं सांस रौ परमाण सामान्य रैवै। त, द, ध रौ उच्चारण करती टैम जीभ दांतां नैं परस करै।

अंत्यानुप्रास

काव्य में सबदां या चरणां रै आखिर में अंतिम दो सुरां री आवृत्ति होवण सूं अंत्यानुप्रास होवै। इणमें बिचाळै व्यंजन सेति सुरां री आवृत्ति सूं अरथ है। दाखलै सरूप—

नहीं तुव साधक तंत न तंत्र। नहीं तुव जंत्र नहीं तुव मंत्र।।
सुमेर न सेस पहिलोय सोज। हुतोज हुतोज हुतोज हुतोज।।

लाटानुप्रास

काव्य में कोई सबद दो या दो सूं घणी बार आवै अर हरेक बार अरथ तौ अेक पण अन्वय बदळ जावै उठै लाटानुप्रास कहीजै, जियां—

त्रिविध त्रिजग्ग त्रिविक्रम तार। चतुरभुज आतम चेतन सार।।

त्रिविक्रम=तीन लोक रा स्वामी। त्रिजग्ग=सुरगलोक, भूलोक अर पताळलोक। त्रिविध ताप=दैहिक, दैविक, भौतिक। इण भांत अठै लाटानुप्रास होवै।

ध्वन्यानुप्रास

जिण सबदां सूं अेक जैड़ी ध्वनि निकळै अर वांरी आवृत्ति होवै उठै ध्वन्यानुप्रास होवै। अथवा अेक-दोय ध्वन्यां रौ आपस में संबंध बतायौ जावै या अेक रै साथै दूजी ध्वनि जुड़्योड़ी होवै, ज्यूं—

पड़ड़ पड़ड़ बूंदां पड़ै, धड़ड़ धड़ड़ धर आज।

बूंदां री ध्वनि रै साथै धरती माथै होवण वाळी ध्वनि रौ जोड़ बैठै। दूजा अरथ में अंत्यानुप्रास वाळै दाखलै में ई अेक जैड़ी ध्वनि वाळा सबद है, पण अेक रौ संबंध दूजै साथै इण भांत है कै आप ई हा, आप ई हौ अर आप ई रैवोला।

यमक अलंकार

औ अेक सबदालंकार है। भरतमुनि कैवै कै यमक सबदां रौ अभ्यास है। अेक सबद दोय या दोय सूं घणी बार काव्य में आवै अर हरेक बार उणरौ अरथ दूजौ होवै तौ उठै यमक अलंकार मानीजै। केई बार पूरौ सबद नीं आयनै उणरौ कीं भाग दूजी बार आवै तौ ई उठै यमक ई मानीजै। आचार्य भरतमुनि यमक रा दस भेद बतावै जिका इण भांत है— पादान्त, कांची, समुद्गक, विक्रांत, चक्रवाल, संदष्ट, आम्रेडित, चतुर्त्य, वसित, माला आद। यमक रौ दाखलौ—

(1)

हरिरस हरि रस हेक है, अन रस अनरस आंण।
विण हरिरस हरिभक्ति विण, जनम व्रथा कर जांण।।

इण छंद में 'हरिरस' ईसरदास बारठ रचित काव्य है, जदकै 'हरि रस' प्रभु भक्ति सूं मिलण वाळौ आनंद है। इणी भांत 'अन रस' संसार रा भौतिक सुख या भोग है, तौ 'अनरस' बिना सार रा, सारहीण, अेहळा है। इण भांत अेक सबद रौ दोय बार प्रयोग अर अरथ न्यारौ होवण रै कारण यमक अलंकार है।

(2)

रण कर रज रज नै रंगै, रवि ढकै रज हूंत।
रज जैति धर नह दिये, रज-रज व्है रजपूत।।

इणमें अेक 'रज' माटी रौ कण-कण मतळब पूरी धरती नैं रंगणौ है तौ दूजौ 'रज' खेह, पगां सूं उड नै ऊपर चढण वाळी धूड़, खंख। तीजै सबद 'रज-रज' रौ अरथ है कै क्षत्रिय आपरौ सरीर टुकड़ां-टुकड़ां (बोटी-बोटी) करावै। रजपूत—धरती रौ सपूत या माटी रौ सपूत, इणमें यमक अलंकार रौ नामी प्रयोग होयौ है।

उपमा अलंकार

औ अेक अरथालंकार है। आचार्य भामह उपमा अलंकार वास्तै लिखै—

विरुद्वेनोपमानेन देशकाल क्रियादिभि:।
उपमेयस्य यत्साभ्यं गुणलेशेन सोपमा।।

अरथात केई बार देस, काळ, क्रिया रै आधार माथै विरुद्ध उपमान सूं उपमेय री समानता दीखै, वौ ई उपमा अलंकार है। पण जठै कीं सैंनरूप, सांपरतेक दीखै उठै ई उपमा अलंकार होवै। इण रा वै 32 भेद बताया है, पण मोटै रूप सूं केई विद्वान इण रा दोय भेद ई बतावै— 1. पूरण उपमा अर 2. लुप्त उपमा। केई विद्वान उपमा रा तीन भेद ई बतावै— 1. पूरणोपमा 2. लुप्तोपमा अर 3. मालोपमा।

उपमा रा अै लक्षण है कै दो वस्तुवां में बरोबरी री बात करीजै। दोनूं में अेक जैड़ा गुणां रै कारण अेक नैं दूजै री उपमा दिरीजै। उपमा में समानता रौ औ सामान्य गुण धरम मानियौ जावै।

उपमेय : जिण सूं किणी वस्तु री समानता बताईजै।

उपमान : कोई खास वस्तु जिणरै बराबर उपमेय नैं बतायौ जावै।

वाचक सबद : उपमेय अर उपमान में बराबरी बतावण वाळौ सबद वाचक है।

साधारण धरम : वै गुण या क्रिया जिका उपमेय अर उपमान दोनूं में लाधै, जिणसूं ओपमा दिरीज नै तुलना करीजै।

पूरणोपमा

पूरण उपमा में उपमेय, उपमान, वाचक सबद अर गुण धरम सगळां रौ मेळ होवै। 'वेलि क्रिसन-रुकमणी री' में पूरण उपमा रा केई-केई दाखला मिळै। आपरी निकेवळी ओपमावां साथै काव्य नैं सरजीवण करण वाळा प्रयोग देखीजै—

संग सखी कुळ वेस समाणी, पेखि कळी पदमिणी परि।
राजति राजकुंअरि रायअंगण, उडीयण वीरज अम्ब हरि।।

इणमें सखियां, तारामंडळ, आभौ अर चंद्रमा आद अेक वातावरण री स्रस्टी करै। पदमिणी री बात करतां ई पूरै सरोवर रौ चित्राम साम्हीं आवै। रुकमणी रै मुख नैं चंद्रमा री ओपमा रै साथै कवि आवगै दरसाव नैं सांपरतेक करै।

लुप्तोपमा

इण अलंकार में जैड़ौ कै नांव सूं ठाह लागै कै उपमेय, उपमान, वाचक सबद अर साधारण गुण धरम मांय सूं कठैई अेक, दोय या तीन रौ लोप होवै, उणां रौ लेख नीं होवै उठै लुप्तोपमा अलंकार होवै—

हंस चलण कदळीह जंघ, कटि केहर जिम खीण।
मुख सिसहर, खंजर नयण, कुच श्रीफळ कंठ वीण।।

अठै हंस उपमान, चाल साधारण धरम क्रिया है, कदळीह उपमान, जंघ उपमेय, 'मुख सिसहर' में मुख उपमेय, सिसहर उपमान है, पण पूरा वरणाव में वाचक सबद, गुण धरम रौ लोप होवण सूं लुप्तोपमा अलंकार है। अठै रुकमणी रौ कठैई उल्लेख नीं होयौ। आ उपमा किणरै वास्तै है, खुलासौ नीं होवण सूं लुप्तोपमा है।

मालोपमा

उपमेय रा वरणाव में जठै अेक सूं घणा उपमानां नैं परोटीजै, उणमें उपमेय (जिणनैं उपमा दी जावण वाळी है) रौ इधकारौ अर आकर्षण बधै वा मालोपमा है। ज्यूं—

गति गंगा मति सरसती, सीता सील सुभाव।
महिलां सरबर मारूवी, अवर न दूजी काय।।

इणमें मारवणी रै वास्तै गंगा जैड़ी गति, सरसती जैड़ी मति अर सीता रै समान सील-सुभाव, इत्ता उपमान लागण सूं मालोपमा है।

रूपक अलंकार

औ अेक अरथालंकार है। आचार्य भरतमुनि इणरै वास्तै कैवै कै जद दो वस्तुवां री तुलना नीं करीज नै कीं खास गुणां रै कारण उपमेय अर उपमान में कीं भेद नीं राखनै अेक-दूजा माथै आरोपित करयौ जावै। सरल सबदां में औ कै जठै अेक वस्तु नैं दूजी रौ रूप दे दियौ जावै कै दूजी मान लेवां तद रूपक अलंकार मानीजै। रूपक अलंकार रा ई तीन भेद बताया जावै— 1. सांग रूपक, 2. निरंग रूपक अर 3. परंपरित रूपक।

'मुख सिसहर' औ अभेद रूपक है। इणमें मुख नैं पूरै निस्चै रै साथै सिसहर (चंद्रमा) कैयनै अभेद री थरपणा करीजी है।

रूपक रौ दाखलौ—

वधिया तनि सरवरि वेस वधन्ती, जोबण तणौ तणौ जळ जोर।
कामणि करग सु बाण काम रा, दोर सु वरुण तणा किरि डोर।।

प्रकृति सूं रुकमणी रै जोबन रौ रूपक सरावण जोग है। चंद्रमा नैं देखनै सागर में ज्वार आवै ई है, उणीज सुभाविक रूप सूं जोबण काळ में अंग-प्रत्यंग रौ उभरणौ अर उणरै पेटै आकर्षण होवणौ लाजमी है।

सांग रूपक

उपमेय माथै उपमान रा अंगां समेत आरोप सांग रूपक है। वीर काव्यां में सूरवीरां रा लूंठा करतबां रा रूपक सरावण जोग है—

घोड़ां घर ढालां पटल, भालां थंभ बणाय।
जे ठाकुर भोगै जमीं, ओर किसौ अपणाय।।
पग पग थटिया पहुणां, खागां सहणी खांत।
पीव परूसै पांत में, भूले केम दुभांत।।

राजस्थानी वीर संस्कृति में घोड़ां रूपी घर, ढाल रूपी छात अर भालां रा थंबा बणावण वाळौ ई धरती रौ वरण करण जोग है। जठै दुस्मियां, सत्रुसेना नैं पांवणा कहीजै, खाग रै झाट री मनवार करीजै। अैड़ा सांग रूपक रा दाखला और कठै लाधै।

निरंग रूपक

इण रूपक अलंकार में उपमान रौ उपमेय माथै आरोपण करयौ जावै। दूजा अंगां री बात नीं करीजै—

सखिए ऊगट मांजिणउ, खिजमति करइ अनंत।
मारू तन मंडप रच्यउ, मिलण सुहावा कंत।।

अठै 'तन' में 'मंडप' रौ आरोपण है। दूजा अंग सहायक कोनी, इण वास्तै निरंग रूपक है।

परंपरित रूपक

इणमें दोय रूपक होवै। अेक रूपक रौ कारण दूजा रूपक में देखीजै—

पंथी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पैहचाइ।
धंण कंमलांणी कमदणी, सिसहर ऊगइ आइ।।

अठै मारवणी रा संदेस में वा कैवै कै थारी धण विजोग में कुमुदणी ज्यूं कुम्हळायगी है। हे ढोला, थूं चंद्रमा ज्यूं आयनै उदयमान व्है। चंद्रमा री चांदणी में कुमुदणी खिल्या करै। इणमें दोय रूपक है। मारवणी कुमुदणी है अर ढोलो चंद्रमा है। इणरै साथै चंद्रमा (सिसहर) रै ऊगण सूं कुमुदणी खिलैला, इण रूपक माथै दूजौ रूप आरोपित होवण सूं परंपरित रूपक बणै।

तादूप्य रूपक

उपमेय नैं उपमान रौ दूजौ रूप कैवण सूं उठै तादूप्य रूपक अलंकार कहीजै—

चन्द्रिका सूं झरत मधु, ताप सैंग हर लेत।
प्राण वाल्ही मुख बीजो चांद, रात-दिवस सुख देत।।

वाल्ही रौ मुख बीजौ चांद होवण रै कारण क्यूंकै अेक चांद तौ है इज, इण वास्तै अठै तादूप्य रूपक होवैला।

रूपक रा भेद

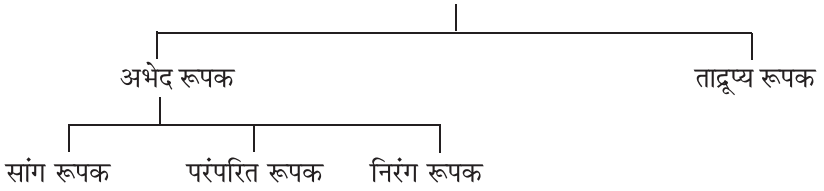

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

समर=याद करणौ, स्मरण। प्रणम=प्रणाम। तिकण=जिका। बाण=वाणी, बोल। गहर=गंभीर, गैराई सूं। सधीर=धीरजवान, धीरप वाळौ। पदवी=पद, ओहदौ। अंतर=बीच। वीसवा वीसै=निस्चै ही, पक्कायत। दीसे=दीखै है, ग्यात होवै। अपंपर=अपरंपार, अपार। धूत=चालाक, धूरत। रढाळौ=रीस वाळौ, बादीलौ। मुणै=कहियौ, कैयौ। जड़=मूरख। आगूंच=पैली, पैलां सूं ई। जदां=जणै। सुघट=मजबूत, उत्तम, नामी। उघट=क्रोध करनै। धुजाई=कंपाय दी। वाल सुतण्ण=अंगद, बालि रौ बेटौ। असंका=निरभय, अडरता। खाटै=अर्जित करणौ, लेवणौ। ब्रष=बरस। सैंस=सहस्र। धारै=धारण करणौ। पधारत=स्वधाम पधारिया, सिधारिया, गया।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. आचार्य मम्मट रै मुजब काव्य रौ मूळ प्रयोजन कांई है?

(अ) आणंद (ब) जस
(स) धन (द) कांता रौ उपदेस

( )

2. काव्य रै किण पख नैं सिरै मान्यौ जाय सकै?

(अ) भाव पख (ब) कला पख
(स) नीति पख (द) कथा पख

( )

3. 'छंद' रौ अरथ है—

(अ) नियमां में बंध्योड़ी काव्य-रचना। (ब) स्तुतिपरक काव्य।

(स) गीत, कविता, दूहा। (द) तुकबंदी वाळी रचना।

( )

4. छंदां रा मोटै रूप सूं भेद किया जावै—

(अ) मात्रिक अर वरणिक छंद। (ब) गद्य अर पद्य।

(स) निरस अर सरस छंद । (द) इण मांय सूं कोई नीं।

( )

5. छंद-सास्त्रीय ग्रंथ रौ नांव है—

(अ) रघुनाथ रूपक (ब) हरिरस

(स) देवियांण (द) रणमल्ल छंद

( )

6. 'रज जैति धर नह दिये, रज-रज व्है रजपूत' में अलंकार है—

(अ) फगत यमक। (ब) फगत अनुप्रास।

(स) यमक, अनुप्रास अर वैण सगाई। (द) वैण सगाई

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. काव्य री परिभाषा लिखौ।
2. काव्य रा कित्ता तत्त्व मानीजै ?
3. विचार तत्त्व बाबत विद्वानां कांई विचार राख्यौ ?
4. काव्य रा भेदां री जाणकारी देवौ।
5. काव्य रौ मूळ प्रयोजन कांई है ?
6. वेलियो छंद किण भांत रौ छंद है ?
7. उपमा अलंकार रा भेद बतावौ।
8. 'मुख सिसहर' औ किणरौ दाखलौ है ?
9. छप्पय में किण दोय छंदां रौ मेळ होवै।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. भाव तत्त्व बाबत आपरा विचार लिखौ।
2. काव्य प्रयोजन सूं आप कांई समझौ ? खुलासौ करौ।
3. काव्य बाबत आचार्य मम्मट रा विचार कांई हा ? समझावौ।
4. काव्य रै खास-खास भेदां रौ खुलासौ करौ ?
5. रूपक अलंकार री परिभासा दाखला समेत लिखौ।
6. यमक री विसेसता दाखला देयनै समझावौ।

7. कुंडळिया छंद रा गुण बतावौ।
8. त्रबंकड़ो किण भांत रौ छंद कहीजै, उणरी विसेसता बतावौ।

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. काव्य प्रयोजना री विगतवार जाणकारी देवौ।
2. काव्य रौ अरथ बतावता थकां उणरै तत्त्वां माथै उजास न्हाखौ।
3. मिनखाजूण में काव्य रै मैतव री विरोळ करौ।
4. अलंकार किणनै कैवै ? अनुप्रास अलंकार नैं भेदोपभेद समेत समझावौ।
5. उपमा अलंकार अर रूपक में आपौ आपरी विसेसतावां रौ वरणाव दाखलां समेत करौ।
6. छंदां रै मैतव नैं उजागर करता थकां किणी दो छंदां री परिभासा दाखलां समेत देवौ।
7. छंदां रा मूळ रूप सूं कित्ता भेद बताया है ? छंदां रा उपभेद समेत वेलिया छंद रौ वरणन करौ।

❑निबंध-लेखण

राजस्थानी निबंध-लेखण

आधुनिक गद्य-साहित्य री विधावां में निबंध लेखण अेक महताऊ विधा है। गद्य रै दूजा रूपां में निबंध लिखणौ अबखौ, आछौ अर कलात्मक मानीजै। इण बाबत हिंदी रा विद्वान लिख्यौ है— 'निबंध गद्य री कसौटी है'। गद्य रौ सांतरौ अर कलात्मक रूप प्रगटै। इण मांय भावां अर विचारां रौ सांतरौ मेळ है। 'सब्दोअर्थो सहभाव साहित्यम्' री बात साची होवै। विचारां अर भावां नैं पाठकां तांई पूगावण रौ लूंठौ माध्यम है— निबंध।

निबंध रौ सबदाऊ अरथ अर परिभासा

निबंध राजस्थानी साहित्य मांय घणौ पुराणौ नीं है। पण इण रा बीज-रूप प्राचीन अर मध्यकालीन राजस्थानी गद्य-साहित्य में देख सकां हां। निबंध सबद अरथात नि:+बंध, किणी विसयवस्तु नैं तै अर आछी भांत सूं बांधणौ। दूजै सबदां में भावां अर विचारां रौ सांतरौ गठण निबंध मानीजै। छोटै अर तै आकार में किणी विसय या वरणाव नैं मौलिकता रै सागै, स्वतंत्र रूप सूं सजीवता सागै लियौ जावै अर जिण मांय भावां अर विचारां री आछी संगती होवै अर लय री खास गति होवै, साचै अरथां में उणनैं ई निबंध मानीजै।

अंगरेजी भासा में निबंध नैं 'ऐस्से' कहीजै, जिण रौ अरथ है— प्रयास, जतन अरथात जिणनैं घणै जतन सूं रचीजै वौ निबंध बाजै।

निबंध रा तत्त्व

निबंध रा मूळ तत्त्वां में भाव, भासा अर सैली नैं सिरै मानीजै।

1. भासा : टकसाळी, व्याकरण रै मुजब, सुद्ध अर पाठक रै मन-मगज नैं परसण वाळी अर बात नैं सावळ कैवण री खिमता राखण वाळी होवणी चाईजै।

2. भाव : भाव देस, समाज अर साहित्य रौ आधार है। निबंध में भाव गैरा, प्रभावसाली, बात नैं सावळ केवटण अर प्रगट करण वाळा सांतरा, ओपता अर विसय रै मुजब होवणा चाईजै।

3. सैली : भाव अर भासा नैं परोटण रौ लेखक रौ निजी तरीकौ। सैल्यां भांत-भांत री पण सैली प्रभावशाली, रोचक-रंजक, पाठक नैं भावां में भीजोवण वाळी अर रळियावणी होवणी चाईजै। मिठास अर रुचि पैदा करण वाळी होवणी चाईजै।

निबंधां रा भेद

मोटै रूप सूं निबंधां नैं आपां दोय रूपां में बांट सकां हां। अेक व्यक्ति प्रधान अर दूजौ विसय प्रधान। इणरै अलावा भी निबंधां रा अनेक भेद है, जियां— सामाजिक, आर्थिक, वैग्यानिक, मनोवैग्यानिक, अैतिहासिक, साहित्यिक, दारसनिक, ललित निबंध आद। मोटै तौर माथै निबंधां रा पांच भेद मानीजै, जिका इण भांत है—

1. विवरण प्रधान निबंध : जीवनी, गाढवाळा कामां, जात्रावां, जुद्ध अर अैतिहासिक घटनावां आद माथै लिखीजण वाळा निबंध विवरण प्रधान निबंध बाजै।

2. वणर्नात्मक निबंध : मौसम रौ मिजाज, तीरथ, मेळा-मगरिया, प्रकृति रा चित्राम, तीज-तिंवार अर नगर सूं जुड़्योड़ा निबंध वर्णनात्मक निबंध मानीजै।

3. संस्मरणात्मक निबंध : डायरी, संस्मरण, रेखाचितराम, जात्रा रौ वरणन, रिपोर्ताज आद निबंध इणमें गिणीजै।

4. भाव प्रधान निबंध : गहरै अैसास, तेज भावां री अभिव्यक्ति, राग तत्त्व, ललित अर निजूपरक वाळा निबंध इण ओळ में आवै।

5. विचार प्रधान निबंध : चिंतन प्रधान, मनोवैग्यानिक दीठ रा, दारसनिक अर अध्यात्म सूं संबंधित, बुद्धि-तत्त्व सूं जुड़्योड़ा विचार प्रधान निबंध बाजै।

निबंध लेखन रा खास अंग

निबंध लेखन री कला नित अभ्यास सूं आवै। इण सारू भाव-भासा अर सैली माथै आछी पकड़ अर सांतरौ मेळ होवणौ चाईजै अर लिखती बगत नीचै लिख्योड़ा अंगां रौ खास ध्यान राखणौ चाईजै।

1. मंडाण (प्रस्तावना) : सिनिमा रै टेलर अर पोस्टर दांई निबंध रौ प्रतिनिधित्व अर महताऊपणौ रोचकता रै सागै प्रस्तावना में प्रगट होवणौ चाईजै। इण मांय निबंध री परिभासा, महताऊपण, पद्य रौ प्रयोग, विवरण अर परिचै आवणौ चाईजै।

2. बीच रौ भाग (प्रसार) : अठै निबंधकार आपरै भावां नैं चतुराई अर ग्यान-कौसल सागै प्रगट करै। विसय री सिरै सूं विरोळ करै। आपरै निजु अनुभव अर विचार नैं सामल करै। निबंधकार री कल्पना, विचारां री खिमता अर लेखन री योग्यता इणी भाग में निजर आवै।

3. उपसंहार (समाहार) : इणमें निबंध रौ निचोड़ जथारथ रै सागै सामल होवणौ चाईजै। मान्यता, विचार, मौलिकता, संभावनावां, भावी आद रौ मेळ करावतां सटीकता रै सागै निबंध रौ सार उपसंहार में प्रगट होवणौ चाईजै।

(1)
देस-निरमाण मांय मोट्यारां री भूमिका

मंडाण

चंगौ मारू घर रयां, तीन अवगुण्ण थाय।
कपड़ा फाटै, रिण बधै, नाम न जाणै काय।।

मोट्यार देस रा करणधार। देस, समाज अर कड़ूंबै री भावी रौ आधार। पण आज देस अर समाज री दसा अर दिसा सोचण जोग है। देस मांय अेकता, सजगपणै, देसहित सारू चेतना, निज करम रौ बोध, नैतिकता, संस्कार आद री कमी लखावै। राजनीति रौ भूंडौ चैरौ अर भस्टवाड़ौ देस अर समाज माथै हावी है। निज हित री भावना देसहित माथै भारी, निज धरम अर करम रै ग्यान रौ तोड़ौ, कोरौ दिखावौ, रूढिवाद अर अंधविस्वास समाज नैं ओक्टोपस दांई जकड़्योड़ौ है। इण दसा मांय मोट्यारां रौ देसहित सारू जिम्मै अर हूंस री मोकळी दरकार है।

आज री मोट्यार पीढी रौ सरूप

समाज अर देस रै बिखराव अर अव्यवस्था नैं सुधारण री जिम्मेदारी मोट्यारां री ई है, पण आज रै जवानां रौ ढंग-ढाळौ कीं हळकौ अर स्तर सूं उतरयोड़ौ है। आज री नूंवी पीढी कुंठा, हतासा, तोड़-भांग री सोच, गैर जिम्मेदार अर वाट्सअप, फेसबुक री आभासी दुनियां में काठी डूब्योड़ी अर खुद तांई सिमट्योड़ी है। समाज रै रीत-रायतै सूं न्यारी आथूणी संस्कृति री हेताळू अर अंगरेजां री खुल्लैपण अर भौंडैपण री रीतियां नैं अंगेजण वाळी पीढी नैं अबै देस अर समाज सारू ई कीं विचार करणौ पड़सी। फैसन, फिल्म अर उघाड़ू संस्कृति में रुचि राखण वाळा मोट्यारां रै मन अर मगज में देस सारू कीं पीड़ा राखण री भी दरकार है।

मोट्यारां रौ फरज

'दुनियां मढौ उण सूं पैली खुद नैं गढौ', आ बात सोळै आना खरी। सावचेती सूं चरित नैं ऊजळौ राखतां आपरै जीवण नैं कीं ऊंचौ उठावणौ पड़सी। खुद में बदळाव अर सुधार सूं देस, समाज अर परिवार में ई बदळाव आसी। अणभण्यौ अर अणगुण्यौ कोरौ-मोरौ ढांडौ अर आधौ, इण सारू भणाई री अलख जगावणी ई जरूरी है। पढ्या-लिख्या रै च्यार आंख्यां। पैलां खुद पढौ-लिखौ, अेक जिम्मेवार नागरिक बणौ, पछै दूजां नैं ई इण सारू आगै लावौ। कोरी नौकरी सारू भणाई फगत अेकलै आदमी रौ विकास है। जिकी भणाई मिनख नैं मिनख बणावै अर देस-समाज सारू टैम आयां खुद नैं सूंपण री सीख देवै, वा साचै अरथां में भणाई है। समाज लारै रैवै तौ आपां कद आगै ?

भणाई रै सागै देस री सांयती अर सुरक्षा रौ जिम्मौ ई मोट्यारां नैं निभाणौ पड़सी। समाज रा कांटा किनारै करण रौ काम ई मोट्यारां रौ है। समाज रौ तानौ-बानौ बण्यौ रैवै, इण सारू सांतरी रीतियां अर संस्कारां नैं परोटणा जरूरी है। सगळै धरमां, वरगां, वरणां रौ सम्मान अर वांरै खातर आछी भावनावां भी देस री अेकता सारू जरूरी है। सगळां सूं जरूरी है— चरित्र। बीखौ मिनख माथै ईज पड़ै अर अबखी वेळा में जिका आपरौ चरित्र नीं खोवै अर नीं दूजां रा खोवण देवै, वै ईज साचै अरथां में देस रौ निरमाण कर सकै। मोट्यारां रौ आछौ चरित्र आछै देस री पिछाण है। देस-निरमाण सारू पैलां चरित्र रौ निरमाण जरूरी है अर इण सारू संस्कार, संगत अर आछौ साहित्य आपां री मदद करै। भूंडै अर कोजै साहित्य नैं जहर रै समान मानौ, उणनैं देस-समाज तांई पूगण सूं रोकणौ चाईजै। चोर-उचक्का, भ्रस्ट अर चरित्रहीण मिजळा मिनखां नैं मोट्यार सजगता सागै संगठित होयनै रोक सकै, अैड़ा उपाव करणा चाईजै। निजू लाभ सारू भूंडी राजनीति रै आंटै में फंसण सूं नूंवी पीढी नैं बचणौ है। आथूणी संस्कृति रै भोगवाद नैं मन-मगज सूं भगावण री अर उण सूं बचण री जरूरत है।

उपसंहार

चरित्र अर मैणत सागै तकनीक अर भणाई रौ सायरौ लेयनै मोट्यार देस नैं ऊंची ठौड़ पूगाय सकै। देस-समाज मांय सुख-सांयती बापर सकै। देस री गाड़ी री धूरी मोट्यार ई है। आं सूं देस नैं घणी आस अर हूंस है। इण वास्तै इण आस अर विस्वास री कसौटी माथै खरौ उतरण रौ प्रयास मोट्यारां नैं करणौ चाईजै। कैयौ है—

गेंद बणा विघनां रा भाखर, होणी री छाती पर खेल
मंजिल चाल्यां ही मिळसी, मोट्यारां देसहित हालो रे।

⌘⌘

(2)

म्हारी व्हाली पोथी

मंडाण

अेक आछी पोथी हजार हळका बेलियां सूं आछी साथण होवै

राजस्थानी भासा रौ उल्लेख विक्रम संवत री नवमी सदी सूं जैन उद्योतन सूरि री 'कुवळयमाळा' में लिखित रूप सूं होयौ है। राजस्थानी साहित्य में गद्य-पद्य री हजारूं-लाखूं पोथ्यां रचीजी अर हरेक पोथी में रचारौ आपरी सगळी काव्यकला अर गद्य लिखण री हटौटी नैं परोटी है अर भावां अर विचारां रौ मधरौ मेळ कर्‌यौ है। कवियां अर लेखकां री अै पोथ्यां राजस्थानी साहित्य री अमोलक धरोहर है। जूण रौ अैड़ौ कोई तत्त्व नीं है, जिण मांय लिखारै नीं लिख्यौ। हरेक विसयां माथै साहित्य री रचनावां मिळै।

'जठै नीं पूगै रवि, बठै पूगै कवि' री कथनी यूं ही नीं घड़ीजी है। कवि री दीठ इण लोक सूं भी परै अलौकिक, भौतिक, अभौतिक ब्रह्मांड रै कण-कण अर खूणै-खूणै रौ बखाण करणौ जाणै। पोथ्यां सूं मोटो अर साचौ मिंत आपां रौ दूजौ कुण होय सकै है ?

म्हारी वाल्ही पोथी

सगळां री आप-आपरी रुचि अर आप-आपरौ रस। किणी नैं कहाणियां अर उपन्यास में रस आवै तौ किणी नें बातां में अर किणी नैं छंदां री छौळ में। कविता अर छंदपरक रचनावां री आपरी न्यारी-निरवाळी मिठास अर मठोठ है। म्हनैं सूर्यमल्ल मीसण री 'वीर सतसई' सबसूं वाल्ही पोथी लागै। म्हनैं ई क्यूं, वीर रस रा सगळा रसिकां नैं आ पोथी घणी दाय आवै। आ राजस्थान री वीर-संस्कृति री साची ओळखाण है। 'वीर सतसई' 1857 री क्रांति रौ पैलौ काव्यगत शंखनाद है। इण सबद-भेरी सूं मायड़ भोम रा सपूतां मांय वीरता रा भाव जाग्या। सात सौ दूहा नीं होवण रै उपरांत ई आ सतसई सूं सवाई मानीजै। वीर रस री सांगोपांग झांकी प्रगट करण वाळौ मानजोग ग्रंथ है। वीर नारी रौ ऊजळौ रूप, जूण नैं देस सारू सूंपण अर कायरता नैं धिक्कारण रा भाव जगावण वाळौ काव्य है। 'दीपै वांरा देस, ज्यांरा साहित जगमगै' अर साहित्य रै आंगणियै वीर सतसई रवि रै उनमान उजास प्रगटै।

वीर सतसई री रचना रौ मूळ

सूर्यमल्ल मीसण राजस्थानी साहित्य में वीर रस रा लूंठा कवि मानीजै अर वांरी 'वीर सतसई' काळजयी रचना होवण रै सागै राजस्थानी रौ गौरव-ग्रंथ मानीजै। वचना सूं बंध्योड़ी कवि री कलम बूंदी नरेश री तलवार री चाल तांई चालती रैयी। अंगरेजां रै विरुद्ध बूंदी नरेश रौ खांडौ अर कवि री कलम सागै-सागै चालण रौ वचन हो। 286 दूहा तांई कवि री कलम जिका वीर भावां नैं उकेरया, वै भावी रचना रौ मूळ बणग्या। वीरां रौ जिकौ बखाण आं दूहां में मिळै, वैड़ौ विश्व रै किणी दूजै साहित्य में नीं मिळै। औ वीर संस्कृति रौ सरावण अर अंजस जोग काव्य है। बूंदी नरेश री तलवार रै रुकण रै सागै ई कवि री वचनां सूं बंध्योड़ी कलम ई रुकगी अर वीर सतसई रा 286 दूहा ई लिखीज सक्या। काव्य रा भावां रौ धरातळ, कवि री मौलिकता अर वीरत्व रौ अद्‌भुत बखाण इणनैं सतसई रै मानकां माथै संख्यात्मक आंकड़ै सूं कम होवण रै उपरांत ई सवायौ थरपै। वीर नारी रै वीर भावां रौ दरसाव देखण जोग है। नारी रौ रूप अबला नीं होयनै सबळा रै रूप में थरपनै कवि नारी-शक्ति में आपरी आस्था प्रगट करी है—

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय।।

वीर सतसई रौ मैतव

आन, बान अर सान लारै प्राण होम करणियां जूझारां री वीर भूमि रौ रुतबौ ऊंचौ करण वाळी आ रचना वीरत्व रौ सांगोपांग चित्रण करै। वीर रस री आधुनिक रचनावां में आ पैलड़ी रचना है। आजादी री लड़ाई मांय परोख रूप सूं धरती-धरम सारू प्राण होम करण रौ अमर सनेसौ देवती आ रचना अठै री 'मरणा नूं मंगळ गिणै' वाळी संस्कृति नैं उजाळै। भाव, भासा अर सैली री दीठ सूं घणी मौजीज रचना मानीजै। आ सूतोड़ा मिनखां में देसहित सारू जागण रौ हलकारौ है। मर्यादा, संस्कृति, परंपरा अर वीर भावां रौ निरूपण इणनैं सबळ बणावै। अलंकारां री ओप, छंदां री छटा, रस रौ दरियाव इण रचना में अनुपम है। भाव अर भासा दोनां रौ धरातळ घणौ ऊंचौ है। वीर रस रै उत्साह रौ संचार सतसई में ऊंचै दरजै रौ है। नमक हलाली सिखावतौ औ काव्य देसहित अर मिनख रै चरित्र नैं उजास देवण वाळौ वीरकाव्य है—

डाकी ठाकर रौ रिजक, ताखां रौ विस अेक।
गहळ मूवां ही ऊतरै, सुणिया वीर अनेक।।

इण काव्यकृति मांय वीर अर सिणगार रस रौ अदीठ, अलबेलौ अर दुरलभ मेळ ई है जिकौ विश्व रै दूजा साहित्य मांय निगै नीं आवै—

करड़ो कुच नूं भाखता, पड़वा हंदी पोळ।
अब फूलां जिम आंग में, सेलां री घमरोळ।।

वीर सतसई रौ असर

वीर भावां सूं लबोलब आ सतसई कायरता नैं नैड़ी ई नीं फटकण देवै। मिनख नैं कायरता अर कर्महीणता सूं बारै काढै। इणरै रचनाकाळ री वेळा मांय अंगरेजां रै खिलाफ कैवणौ तौ दूर सोचणौ ई मोटी बात ही। जद वीरां री तलवार री धार मगसी पड़ै ही उण वेळा आ सतसई जन-जन में वीरत्व रौ संचार करयौ। वीर नारी रै वीर भावां रौ इसौ वरणाव अर दरसाव दूजै किणी ई साहित्य री पोथी मांय निगै नीं आवै। माता, पत्नी, बहन अर भोजाई सगळै रूपां में अेक वीरांगना कायरता नैं धिक्कारै अर धरती अर धरम री रक्षा सारू प्राण तक होम करण रौ अमर संदेसौ देवै—

सहणी सब री हूं सखी, दो उर उलटी दाह।
दूध लजाणो पूत सम, वळय लजाणौ नाह।।

उपसंहार

आधुनिक राजस्थानी रै वीर रस री रचनावां में वीर सतसई सिरमौर मानीजै। भाव-भासा अर मौलिकता री दीठ सूं आ अेक ओपती, राजस्थान री वीर संस्कृति री रुखाळीदार अर असरदार रचना है। कायरता नैं धिक्कारती मायड़ भोम सारू वीरां नैं जगावती देसहित री सिरमौर रचना है— वीर सतसई। अैड़ी रचनावां काळजयी होया करै अर होवणी ई चाईजै। वीर सतसई आजादी रै अलख री पैलड़ी चिणगारी री उत्प्रेरक रचना है। काव्यगत दीठ सूं ई छंद, अलंकार अर रस रौ ओपतौ अर सुभाविक प्रयोग इण मांय होयौ है। वीर सतसई रा वीरत्व भावां रा दूहा जन-जन रै कंठां जुगां लग रमसी अर जनमानस में अखूट रैसी।

⌘⌘

(3)

कन्या भ्रूणहत्या

मंडाण

मायड़ म्हनैं मतना मार
हूं थारौ मान, घर-संसार।

परमात्मा री स्रस्टि में मिनख री घड़त सबसूं वाल्ही। जाणै चितारौ खुद चित्राम होयग्यौ। स्रस्टी री कल्पना अर्द्धनारीश्वर री है। मिनख अर लुगाई अेक दूजै रा पूरक। अेक दूजै रौ भावी आधार अर दोनां री आप-आपरी महताऊ ठौड़, पछै नारी तौ देस, परिवार अर समाज सारू सवाई है। दया, ममता, सहयोग, त्याग, प्रीत, जुड़ाव अर अनेक संस्कारां रौ स्रोत अर उद्गम नारी ईज है। थांरै-म्हारै अर सगळां रै अस्तित्व रौ आधार कोई नारी ई है। स्रस्टी रौ बधापौ नारी करै अर असामाजिक अर अपूरण मिनख नैं पूरण बणावण में नारी रौ योगदान अतुल्य है। पण आज रै बगत में मिनख अर नारी रौ आंतरौ अर ओहदौ कीं भेदगत है। लिंगभेद री मानसिकता पनपी है। छोरी नैं काळजै रौ भार, भाटौ, कळंक रौ बैम, दुरभाग रौ बीज मानण री बीमारू सोच समाज अर परिवार खातर घातक सिद्ध होय रैयी है। कन्या नैं गरभ में ईज मारण रौ पाप चाल रैयौ है। पुरुसवादी पितृसत्तात्मक सोच रौ समाज भावी नैं गरत में न्हाख रैयौ है। कन्या भ्रूणहत्या चिंता रौ विसय है। इण सारू विचार अर उपाव जरूरी है।

कन्या भ्रूणहत्या रा कारण

छोरी जलमतां ई बेटै री भूखवाळा मायत माथौ पीटै अर खुद नैं दुरभागी मान नै कोसै अर पछै छोरी रौ गळौ मोसै, पण औ कठै तांई चालसी ? छोरी नैं छाती रौ भार मानै, उणनैं भणावण अर उणरै ब्यांव नैं मोटी आफत मानै अर अंटी सूं धन जावण रौ भय सतावै। ब्यांव में दायजै रौ दानव टैम सूं पैलां ई मां-बाप नैं सोच में न्हाखै। काळौ मूंढौ होवण रौ बैम आठूं पौर खावै। छोरी परायौ धन मानीजै। वंस बधापै री लाळसा अर छोरी नैं छाती रौ भाटौ मानण रै कारण छोरी जलमतां ई उणरौ घांटौ टूंपण जैड़ा महापाप रौ समाज में चलन-सो होयग्यौ है अर घणकरा तौ गरभ में ईज कन्या भ्रूणहत्या कर न्हाखै। सोनोग्राफी रै सख्त कानून सूं पैली तौ जलम सूं पैलां ई लिंग री जांच हो जावती अर कन्या होयां उणनैं गरभ में ईज मार देवता।

सोनोग्राफी मसीन कन्या भ्रूणहत्या रौ मोटौ हथियार है। इणरै सायरै सूं जलम सूं पैलां ई लिंग रौ परीक्षण होय जावै। इण सूं लिंगानुपात रौ तालमेळ बिगड़ग्यौ है। देस में 2500 कन्या-हत्या हर रोज औसत होय रैयी है। हरियाणा, पंजाब, दिल्ली आद राज्यां में आ दर सबसूं बेसी है। कन्या-हत्या रौ संबंध, गरीबी, अशिक्षा सूं घणौ नीं होयनै स्हैरी अर स्वारथी मध्यमवर्गीय परिवारां अर समाज री बीमार सोच रै कारण है। औ भेद बीमारी रै दांई फैल रैयौ है।

कन्या भ्रूणहत्या रोकण रौ उपाव

भारत सरकार सगळै देस में सोनोग्राफी मसीन सूं लिंग ग्यान परीक्षण पूरण रूप सूं प्रतिबंधित कर दियौ है अर इण सारू 'प्रसव सूं पैली निदान तकनीकी अधिनियम (पी.एन.डी.टी.) 1944' रै त्हैत कठोर दंड रौ विधान ई है। नारी सशक्तीकरण अर स्वावलंबन री केई योजनावा सरकार संचालित करै। छोरयां सारू निशुल्क शिक्षा रौ प्रावधान है। अेकल पुत्री अर दो पुत्री योजनावां चालै। इणरै अलावा केई पुरस्कार अर योजनावां ई बालिका-शिक्षा रै बधापै सारू चालै। बालिकावां नैं ई माईतां री संपत्ति में अधिकार दिरीज्यौ है। भारत रौ संविधान वांनै लिंगभेद नीं करण रौ अधिकार देवै। दायजौ (दहेज) आज दंडनीय अपराध मानीजै। छोरयां रै जलम माथै सरकार वां सारू केई पुरस्कार, प्रोत्साहन राशि अर भावी री सुरक्षा रा इंतजाम करै। छोरी रै जलमण माथै ई अबै थाळी बाजण जैड़ी स्थिति आवण में घणौ टैम नीं है। पैलां सूं लोगां री सोच में बदळाव आयौ है। सरकार रौ करड़ौ कानून अर समाज में चेतना आवण सूं परिस्थितियां में पैली सूं कीं बदळाव है। पण 'अजै लग दिल्ली दूर' है। आज ई अखबार में नाळा, झाड़क्यां अर अकूरड़ी माथै कन्या भ्रूणहत्या रा प्रमाण मिळै।

उपसंहार

जद तांई समाज इण समस्या सूं पूरी तरै नीं ऊबरै अर कन्याभ्रूण हत्या रै सिलसिलै माथै पूरण विराम नीं लागै, उण टैम तांई समाज अर सरकार नैं मिळनै इण सारू उपाव-प्रयास करणा पड़सी। लिंगानुपात री असमानता सूं अनेक सामाजिक समस्यावां पैदा होवै। भावी पीढी सारू घणौ मोटौ संकट अग्यानता सूं पैदा होय रैयौ है। देस रा आज केई अैड़ा राज्य है, जठै छोरयां रौ अनुपात घणौ कम है। इण सूं समाज रौ ढांचौ बिखरै अर केई सामाजिक अर मनोवैग्यानिक संकट खड़ा होवै।

⌘⌘

(4)

राजस्थानी काव्य में पर्यावरण संचेतना

मंडाण

साख संपदा सुख सकळ, बरसौ बरस बधैह।
धन अन जळ मरुधर धरा, कसर न पड़ै कदैह।।

सुख-संपत अर उपज में लगोलग बधोतरी होवै अर मरुधरा मांय धन, अन्न अर जळ री कदैई कमी नीं रैवै। इणी कामना नैं अंतस में बसायनै राजस्थानी कवियां हमेस जुग-चेतना रौ काव्य रचियौ। राजस्थानी साहित्य मांय प्रकृति संचेतनापरक काव्य री लांबी अर ऊजळी परंपरा रैयी है, क्यूंकै प्रकृति अर मिनख रौ जुगादु सगपण रैयौ है। इण वास्तै प्रकृति रा फूठरा, कंवळा अर करड़ा सगळा रूपां रौ वरणाव राजस्थानी कवियां करयौ है।

प्रकृति अर पर्यावरण

प्रकृति रा बदळता रूपां, रितुवां रौ वरणाव, बारहमासा वरणन मांय हरेक महीनै मांय मौसम रै मुजब मिनख री मनगत, आचार-विचार, वैवार सूं ठा पड़ै है आपां रौ जीवण प्रकृति सूं अलायदौ नीं है। हवा-पाणी रै प्रभाव नैं खुद अनुभूत करनै अठै कवियां उणनैं आपरी काव्य-रचनावां में संजोयौ है। मौसम रै परवाण आवण वाळा राग-रंग अर उच्छबां मांय प्राकृतिक सुखां री चिर कामना रै सागै उन्हाळै रै तपतै तावड़ै अर लूआं रा लपरका रौ ई सुआगत करयौ है। बसंत री सगळी सोभा 'लूआं' री भेंट चढाय दी, क्यूंकै उण विणास रै पछै ईज तौ नूंवै सिरजण री बेळा 'बादळी' रौ रूप लेयनै आवैला। इण मरुधरा रा वासी री सगळी आसावां बिरखा सूं जुड़्योड़ी है। जिण भांत अठै री लोक नायिका बिरखा री बूंदां में परदेस में रैवणियै आपरै सुगणै सायबा रौ संदेसौ पढ लेवै, ठीक उणीज भांत वा बायरियै सूं कैवै कै थूं उणीज दिस में चाल जिण कानी म्हारा परदेसी पिवजी बसै है। पसु-पंखेरुवां रै सागै मिनख रा मीठा-मधरा संबंधां नैं दरसावतै पूरसल काव्य रौ सिरजण राजस्थानी मांय होयौ है— मोर, पपैया, कुरजां, कागला, गोडावण, हंस, चकवा-चकवी अर बीजा पंखेरुवां साथै आपरी भावनावां रौ ताळमेळ बिठावती विरहणियां संवेदनावां रौ सागर उंधाय दियौ है। गाय, घोड़ा, ऊंठ, हाथी, सिंघ, वाराह अर हिरणां रै सागै भायलाचार री मानवीय भावनावां रौ उल्लेख काव्य में होयौ है। पसु-पंखेरुवां रै साथै बिरछां रै सरूप, वांरी महिमा, गुण-धरम, रूंखपूजा री परंपरा, लोकजीवण में रूंखां रै मांगळिक विस्वास अर मान्यता, बिरछ लगाईजण रौ लोक माहात्म्य, पौधा लगावण री वैग्यानिक विधियां अर वांरै संरक्षण रा उपाव, प्राणी मात्र सारू रूंखां री उपादेयता अर औषध विग्यान में भांत-भांत रै रूंखां री गुणवत्ता रौ लोक हितकारी बोध राजस्थानी काव्य में होयौ है। रूंख में सगळा देवतावां रै दरसण री महिमा है। रूंख उदार अर परतापी सासक री भांत भूमंडळ री रिछ्या करै।

रूंख विनायक रूप वर, रूंख सारदा रूप।
देवां रा इणमें दरस, भू छाजण बड भूप।।

राजस्थानी संस्कृति में काति रै महीनै रौ मोटौ माहात्म्य है। इण महीनै में तुळसी-पूजा, बैसाख में पीपळ अर नीम, फागण शुक्ला इग्यारस नैं आंवळै री पूजा करणौ उत्तम मानीज्यौ है। अठै लोकदेवता गोगाजी रै प्रतीक रूप मांय खेजड़ी री पूजा करीजै। राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति में रूंख-पूजा री लूंठी अर लांबी परंपरा अठै री वरत-कथावां, धारमिक उच्छबां, तीज-तिंवारां अर गीतां (भजन, हरजस, सामाजिक लोकगीत) में दीठगत होवै। रूंखां रौ आपणै जीवण में इत्तौ इधकौ महत्त्व है कै अै आपां री परंपरा रा प्रतीक बणग्या है, जियां खेजड़ी री हरी डाळी रै संकेत सूं जांन (बरात) आवण री सूचना, जाळकी री डाळी सूं ब्यांव रै मौकै 'तोरण' टांकणौ, मांगळिक अवसरां माथै मूंगधणा (रसोई सारू बरतीजणियौ ईंधन) बधावण अर पूजण री परंपरा, मारग माथै लगायोड़ै रूंखां नैं पंथवारी रै रूप में सींचण अर पूजण री परंपरा पर्यावरण संरक्षण रौ संदेस देवै।

उपसंहार

जीव-जगत री जरूरतां नैं पूरी करण वाळा अै सतजुग रा कळप-बिरछ है, जिका सगळां नैं आसरौ देयनै लोकहित रौ काम करै—

जीव विहग पशु जोयलौ, संत देवता सोय।
अद्री रै उपयोग सूं, हरख मानखे होय।।

औ इज कारण है कै रूंख लगायनै मिनख पितृरिण सूं मुगती पाय जावै अर उणरी भावी पीढियां रौ ई इण सूं कल्याण होवै—

रूंख आदमी रोपनै, पावै जस बड़ पाण।
पितरां भावी पीढियां, करै अेम कल्याण।।

⌘⌘

(5)

जे म्हैं देस रौ प्रधानमंत्री होवतौ

मंडाण

ज्यूं तारा मंडल मांय चांदो ओपै
त्यूं मंत्रिमंडळ मांय प्रधानमंत्री ओपै

हर मिनख रौ मन सुपनां अर आछै भविस सारू कल्पनावां री पांख पसारै। देस नैं अंगरेजां री गुलामी सूं मुगत होयां आज केई दसक बीतग्या अर देस में लोकतंत्र री जड़ां घणी मजबूत होयी है। लोकतंत्र रौ मूळ मतदाता अर मतदाता ईज देस रा विधायक, सांसद, मंत्री अर प्रधानमंत्री बणै अर बणावै। पख-विपख दोनूं देस रै प्रधानमंत्री सारू खेचळ अर भागदौड़ करै। म्हारौ मनड़ौ भी देस रौ प्रधानमंत्री बणण री हूंस अर कल्पना सूं भरयौ है। म्हैं ई लोकसभा रौ चुणाव जीतनै देस रौ प्रधानमंत्री बणणौ चाऊं। कास, इसौ होवतौ तौ कित्तौ आछौ होवतौ। म्हारै मन में देस रौ प्रधानमंत्री बणण अर देस सारू कीं करण री मनसावां घर करयोड़ी है। बियां बहुमत हासिल करयोड़ै राजनीतिक दळ रौ नेता ईज देस रौ प्रधानमंत्री बणै अर लोकतंत्र अर संसदीय सासन प्रणाली मांय प्रधानमंत्री देस सारू घणौ प्रभावशाली अर महताऊ होवै। वौ चावै ज्यूं देस री दिसा तय कर सकै। प्रधानमंत्री चावै तौ देस नैं विश्वगुरु बणा सकै। देस नैं विकास री नूंवी योजनावां अर भावी सोच सागै ऊंची ठौड़ पूगाय सकै।

देस रौ प्रधानमंत्री बणणौ

देस रौ प्रधानमंत्री बणणौ घणै अंजस री बात है। आपरै दळ रै सगळै सांसदां रौ विस्वास अर प्रेम रै सागै समरथन हासिल होयां पछै ई प्रधानमंत्री जैड़ौ गीरबैजोग पद मिळै। जे अैड़ौ होवतौ तौ म्हैं सगळां रौ भरोसौ अर साथ लेयनै आगै बधतौ। मंत्रिमंडळ में सांतरा अर चरित्रवान सांसदां नैं वांरी खिमता मुजब ठौड़ देवतौ अर देस रौ सासन आछै ढंग सूं चलावण रौ प्रयास करतौ। जन री पीड़ावां अर वांरी मनसावां माथै खरा उतरणियां, जिम्मेदार अर मैणती सांसदां नैं सासन रौ काम सूंपतौ, जिका देस री समस्यावां अर विकास रै मारग रै रोड़ै नैं समझण अर वांसूं निपटण री खिमता राखै।

प्रधानमंत्री बण्यां म्हारा कर्तव्य

जे म्हैं देस रौ प्रधानमंत्री होवतौ तौ देसहित सारू जनता री प्राथमिकता नैं ध्यान में राखतां नीचै लिख्या मुजब काम पूरा करण रौ प्रयास करतौ।

1. देस री विदेस नीति नैं असरदार अर भावी देसहित नैं ध्यान में राखनै बणावतौ।
2. देस री रक्षा-सेनावां रै आधुनिकीकरण, तकनीकी अर सबळता सारू रक्षा-बजट बधावतौ।
3. प्रवासी देसवासियां नैं देस खातर योगदान सारू प्रेरित करतौ।
4. विदेसां सूं करजा लेवण री रीत री जग्यां देस रै ईज लोगां नैं आतमनिरभर बणावण सारू योजनाबद्ध काम करतौ।
5. लघु उद्योगां, ग्रामीण उद्योग-धंधां नैं आगै बधावतौ। इण सारू वित्त रौ उचित प्रबंध करतौ। गांव अर स्हैर रा बेरोजगारां नैं उद्योग-धंधा अर रोजगार सूं जोड़तौ।
6. शिक्षा रै स्तर नैं सुधारतौ। भणाई अर गुणाई रौ मेळ करण रौ उपाव करतौ। देस रा गरीबां सारू मुफत भणाई री व्यवस्था करतौ।
7. वैग्यानिक, तकनीकी अर रोजगारपरक शिक्षा सागै व्यावहारिक अर नैतिक शिक्षा माथै जोर देवतौ जकी वैग्यानिक सोच अर संस्कारां सागै आगै बधै-बधावै।
8. देस मांय यातायात री वैवस्था नैं सुचारू करतौ, वांरा नूंवां साधनां नैं बधावण सारू प्रयास करतौ जिका पर्यावरण नैं सागै लेयनै चालै।
9. देस नैं हर्‌यौ-भर्‌यौ करण सारू घणै सूं घणा रूंख लगवावतौ।
10. सगळा धरमां अर वरगां रा लोग भेळप अर भाईचारै सागै रैवै, अैड़ा उपाव करतौ।
11. आतंकवाद, नक्सलवाद अर देस विरोधी तत्त्वां सूं नीति अर पूरी ताकत सागै निपटतौ।
12. भ्रष्टाचार री जड़ां खोदनै लूण न्हाखतौ अर इणनैं जड़ामूळ सूं मिटावण रौ प्रयास करतौ।
13. गरीबी अर बेरोजगारी मिटावण सारू धरातळ री सांतरी योजनावां बणायनै वांनै सख्ती सूं लागू करावतौ।
14. विश्व में भारत री भूमिका अर कद नैं बधावतौ अर विश्व-सांति अर भाईचारै सारू भारत रै पेटै विश्व रा देसां री आस माथै खरौ उतरतौ।

देस सारू विकास रा सोपान

इण भांत प्रधानमंत्री बण्यां म्हैं देस नैं संगठित, वैवस्थित अर सुचारू विकास सारू योजनाबद्ध तरीकै सूं आगै बधावतौ। भारत नैं विश्वशक्ति अर विकसित देस बणावण रा पुरजोर तरीका अपणावतौ। देस री आंतरिक सुरक्षा-सांति अर भेळप नैं पुख्ता करतौ। देस री भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, खगोलीय, वैग्यानिक अर नैतिक प्रगति रा खास उपाव करतौ। नूंवा सोध अर वैग्यानिक आविस्कारां नैं बधावौ देवतौ, जिका प्रकृति अर पर्यावरण नैं परोटता मिनख-मानखै नैं आगै बधावै। आणविक शक्ति रौ बिजळी री उत्पादकता बधावण सारू उपाव करतौ।

⌘⌘